ताजमहल

तेजोमहालय शिव मंदिर है

पुरुषोत्तम नागेश ओक

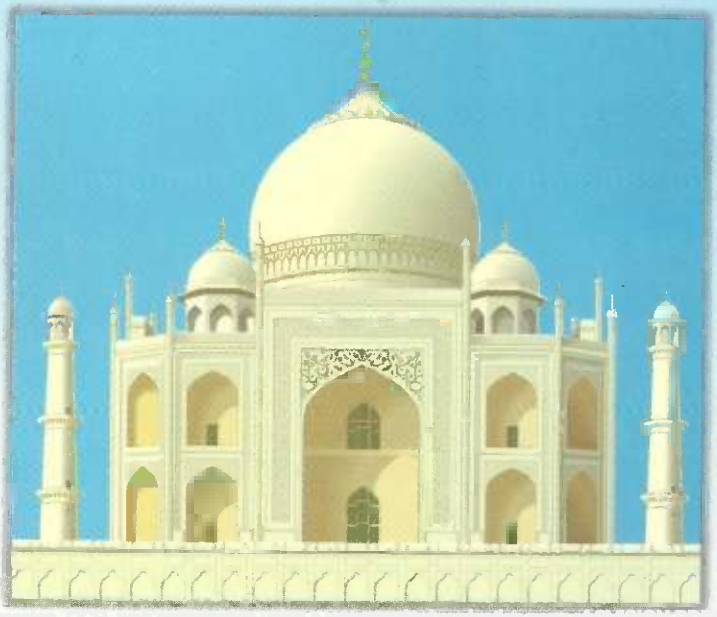

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पुरुषोत्तम नागेश ओक की अन्य रचनाएं

भारत का द्वितीय संग्राम	
अर्थात् आज़ाद हिन्द फौज की कहानी सचित्र रंगीन	रु 220
क्या भारत का इतिहास भारत के शत्रुओं द्वारा लिखा गया है ?	रु 30
हास्यास्पद भाषा अंग्रेजी	रु 45
ताज महल मन्दिर भवन है	रु 65
विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय	रु 60
भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें	रु 75
कौन कहता है अकबर महान था?	रु 70
भारत में मुस्लिम सुल्तान भाग - 1	रु 70
भारत में मुस्लिम सुल्तान भाग - 2	रु 55
आगरा का लाल किला हिन्दू भवन है	रु 55
दिल्ली का लाल किला लाल कोट है	रु 55
फतहपुर सीकरी हिन्दु नगर है	रु 55
लखनऊ के इमामबाड़े हिन्दू भवन हैं	रु 40
क्रिश्चियनिटी कृष्ण नीति है	रु 75
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास - 1	रु 75
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास - 2	रु 85
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास - 3	रु 85
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास - 4	रु 85
The Taj Mahal Is A Temple Palace	Rs 250
World Vedic Heritage 2 vols.	Rs 600
Some Missing Chapters Of World History	Rs 250
Some Blunders of Indian Hist Research	Rs 250
Who Says Akbar Was Great	Rs 250
Agra Red Fort is a Hindu Building	Rs 75

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ताजमहल
तेजोमहालय शिव मंदिर है

लेखक : पुरूषोत्तम नागेश ओक

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली - 110005

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

©. लेखकाधीन

पुस्तक मूल्य : 20 रुपये

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन,
2 बी. डी. चैंबर्स,
10/54 देशबंधु गुप्ता रोड, करोल बाग,
नयी दिल्ली - 05

ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com

दूरभाष : 23553624, 23551344

संस्करण : (2009 ई0) 2065 विक्रमी सम्वत्

पुस्तक : ताजमहल तेजोमहालय शिव मंदिर है

लेखक ; पुरुषोत्तम नागेश ओक

मुद्रक : संजीव ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

TAJMAHAL TEJOMAHALAYA SHIV MANDIR HAI
By. P.N.Oak ,Rs : 20

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

प्राक्कथन

सम्भवत: जीवन में एक वार भी प्रवंचित न होने वाला व्यक्ति कोई नहीं है, परन्तु क्या समूचे विश्व को प्रवंचित किया जा सकेगा? यह असम्भव प्रतीत होता है। फिर भी सैकड़ों वर्षों से भारतीय एवं विश्व इतिहास में की गई हेरा-फेरी से समूचे विश्व को ही धोखा दिया जा रहा है।

विश्व का सुप्रसिद्ध भवन आगरा का ताजमहल इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है। निजी समय, धन का व्यय एवं कष्ट सहते हुए ताजमहल देखने के लिए विश्व भर से हजारों पर्यटक आते रहते हैं, वास्तव में उन्हें यह विदित कराना चाहिए कि ताजमहल इस्लामी मकबरा न होकर 'तेजोमहालय' नाम का शिव मंदिर है जो तत्कालीन राजा जयसिंह से पंचम मुगल सम्राट् शाहजहाँ ने छीन लिया था। अत: ताजमहल को शिव मंदिर की दृष्टि से देखना चाहिए न कि इस्लामी मकबरे की दृष्टि से। दोनों में आकाश-पाताल जैसा अन्तर है। कहाँ कब्र और कहाँ देवालय! अब आप इसे इस्लामी मकबरे की दृष्टि से देखते हैं तब इसकी महत्ता, वैभव और सुन्दरता निरर्थक एवं निराधार लगती है, परन्तु ज्यों ही एक मंदिर की दृष्टि से इसका पर्यवेक्षण करेंगे तब आप निश्चय ही इसकी परिखाएँ, छोटी-छोटी पहाड़ियाँ, भवन के विविध दालान, झरने, फौव्वारे, शानदार बगीचे, सैकड़ों कमरे, कमानों से सुसज्जित बरामदे, चबूतरे, बहुमंजिले-महल, गुप्त एवं बन्द कक्ष, अतिथिशाला, अश्वशाला, गौशाला, गुम्बद और वर्त -मान नकली कब्र कक्ष (जहाँ कभी शिवलिंग होता था) की बाहरी दीवारों पर खुदे पवित्र ॐ अक्षर की ओर दृष्टि डालेंगे तो एक नया ही रूप दिखने

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

को मिलेगा। इस पुस्तिका में हम उस सनसनीखेज ऐतिहासिक शोध को संक्षिप्त रूप में ही प्रस्तुत कर रहें हैं।

इसके विभिन्न प्रमाण अधिक गहराई से अध्ययन करने हेतु पाठक पी० एन० ओक की पुस्तक 'ताजमहल मंदिर भवन है' पढ़ें जिसमें विस्तृत विवरण सचित्र प्रमाणों के साथ है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ताजमहल : तेजोमहालय शिव मंदिर है

1. ताजमहल नाम का उल्लेख औरंगजेब तक के किसी भी तवारीखों में या दरबारी दस्तावेजों में कहीं भी नहीं मिलता है।
2. इसे ताज-इ-महल याने महलों का ताज कहने का प्रयास करना हास्यास्पद है, क्योंकि यह तो इस्लामी कब्र है। कब्र को कभी भी विश्व में कहीं भी महल न कहा जाता था न कहा जाता है।
3. इसका अन्तिम पद 'महल' इस्लामी शब्द ही नहीं है, क्योंकि अफगानिस्तान से लेकर अलजीरिया तक फैले विस्तृत इस्लामी प्रदेशों में 'महल' नाम की एक भी इमारत नहीं है।
4. सामान्य धारणा यह है कि इसमें दफनाई महिला मुमताज़ महल के नामानुसार इसका नाम ताजमहल रखा गया है। यह दो दृष्टियों से असंगत है।प्रथम बात तो यह है कि शाहजहाँ की उस पत्नी का नाम मुमताज महल नहीं अपितु मुमताज़-उल्-जमानी था। द्वितीयत: मुमताज की स्मृति में बने उस भवन को नामांकित करते समय दो आद्य अक्षर 'मुम्' उड़ा देना हास्यास्पद है। एक महिला के नाम के आरम्भ के दो अक्षर हटाकर शेष हिस्सा इमारत का नाम बनता है, यह किस व्याकरण का नियम है?
5. फिर भी उस महिला का नाम मुमताज़ होने के कारण यदि उससे इमारत का नाम पड़ता तो वह इमारत ताज़महल कहलाती, न कि ताजमहल।
6. शाहजहाँ के समय भारत में आए हुए यूरोप के कई पर्यटकों ने इस भवन का उल्लेख ताज-ए-महल नाम से किया है जो शिव मंदिर सूचित करने वाला संस्कृत शब्द तेजोमहालय का बिगड़ा रूप है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

स्वयं मुगल बादशाह शाहजहाँ और औरंगजेब के दरबारी दस्तावेजों में या तत्कालीन तवारीखों में ताजमहल शब्द का उल्लेख भी नहीं है, क्योंकि तेजोमहालय उर्फ ताजमहल संस्कृत शब्द है।

7. कब्र का अर्थ विशाल इमारत नहीं अपितु केवल इमारत के अन्दर स्थित मृतक के शव पर बना टीला होता है। इससे पाठकों को ज्ञात होगा कि हुमायूँ, अकबर, मुमताज, एतमाद-उद्-दौला, सफदरजंग आदि व्यक्तियों के शव कब्जा किये गये हिन्दुओं के विशाल भवनों में ही दफनाए गये हैं।
8. यदि ताजमहल मकबरा होता तो उसे महल नहीं कहा जाता, क्योंकि महल में तो सजीव व्यक्ति ही रहते हैं।
9. चूँकि ताजमहल का उल्लेख शाहजहाँ तथा औरंगजेब-कालीन किसी भी मुगल लेख में नहीं है, ताजमहल के निर्माण का श्रेय शाहजहाँ को देना उचित नहीं। उन्होंने ताजमहल शब्द का उल्लेख जानबूझकर इसलिए टाल दिया क्योंकि वह मूलतः तेजोमहालय एक पवित्र हिन्दू संस्कृत शब्द है। जिसका वर्णन उन्हें पसन्द नहीं था।

मंदिर परम्परा

10. ताजमहल संस्कृत शब्द तेजोमहालय यानि शिव मंदिर का अपभ्रंश होने से पता चलता है कि अग्रेश्वर महादेव अर्थात् अग्रनगर के नाथ ईश्वर शंकर जी को यहाँ स्थापित किया गया था।
11. शाहजहाँ के पूर्व समय से जब ताज एक शिव मंदिर था तब से ही जूते खोलकर अन्दर प्रवेश करने की परम्परा आज भी मौजूद है। यदि यह भवन मकबरा ही होता तो इसमें प्रवेश करते समय जूते उतार देने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती बल्कि कब्रस्तान में तो जूते पहनना आवश्यक होता है।
12. पर्यटक देख सकते हैं कि संगमरमरी तहखानों में बनी मुमताज के कब्र की आधारशिला सादी सफेद है जबकि पड़ोस की शाहजहाँ की कब्र और ऊपरले मंजिल में बनी शाहजहाँ-मुमताज की कब्रों पर हरे

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बेल-बूटे जड़े हैं। इससे निष्कर्ष यह निकलता है कि वह सफेद संगमरमरी शिला अलग से बनी थी जो कि मूलत: शिवलिंग की आधारशिला थी। वह अभी अपनी जगह पर है और मुमताज़ के वहाँ दफनाए जाने की कहानी कपोल-कल्पित है।

13. संगमरमरी जाली के शिखर पर बने कलश कुल 108 हैं जो संख्या पवित्र हिन्दू धर्म की परम्परा है।

14. ताजमहल के संगमरमरी तहखाने के नीचे जो लाल पत्थर की बनी मंजिलें शाहजहाँ द्वारा आवड़-खाबड़ चुनवा दी गई हैं उनमें से कई बार पुरातत्वीय कर्मचारियों को मूर्तियाँ मिली हैं। दरारों में से अन्दर झाँकने वाले व्यक्तियों को अन्दरूनी अँधेरे दालानों में मूर्तियों से अंकित स्तम्भ भी दिखाई दिए थे। ऐसे कई रहस्य सरकारी आदेशों द्वारा गुप्त रखे गये हैं। सरकारी पुरातत्व कर्मचारी तथा अन्य पुरातत्वेता, ऐतिहासिक तथ्यों को उजागर करने के अपने कर्तव्य के प्रति सचेत हो पर्यवेक्षण करने के बजाय, इस सम्बन्ध में विचारपूर्वक, सभ्य तरीके एवं कूटनीति से चुप्पी साधे बैठे हुए हैं।

15. भारतवर्ष में बारह ज्योतिर्लिंग अर्थात् मुख्य शिव मंदिर हैं। यह तेजोमहालय याने तथा कथित ताजमहल उनमें से एक है, क्योंकि ताजमहल की ऊपर के किनारे में नाग-नागिन की आकृतियाँ जड़ी होने से स्पष्ट होता है कि यही मंदिर नागनाथेश्वर के नाम से जाना जाता था। शाहजहाँ के अधिग्रहण के बाद से इसने अपनी हिन्दू महत्ता खो दी।

16. विश्वकर्मा वास्तुशास्त्र नामक वास्तुकला के विवेचनात्मक प्रसिद्ध ग्रन्थ में उल्लिखित विविध प्रकार के शिवलिंगों में तेजोलिंग का उल्लेख करता है जो हिन्दुओं के आराध्यदेव शिवाजी का चिन्ह होता है। वैसा तेजोलिंग ही ताजमहल के अन्दर प्रतिष्ठित हुआ था। अत: यह तथाकथित ताजमहल तेजोमहालय ही है।

17. आगरा शहर जहाँ ताजमहल अवस्थित है, प्राचीनकाल से शिवपूजा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

का केन्द्र रहा है। यहाँ की धार्मिक जनता श्रावण मास में रात्रि का भोजन करने से पूर्व पाँच शिव मंदिरों के दर्शन करती थी। पिछली कुछ शताब्दियों से आगरा के निवासियों को बल्केश्वर, पृथ्विनाथ, मन-कामेश्वर और राज-राजेश्वर इन चार शिव मंदिरों के ही दर्शन से सन्तुष्ट होना पड़ रहा है, क्योंकि उनके पूर्वजों का आराध्य पाँचवें मंदिर का देवता उनसे छीना गया। स्पष्टत: अग्रेश्वर महादेव नाग नाथेश्वर ही उनके पाँचवें आराध्य थे जो तेजोमहालय अर्थात् तथाकथित ताजमहल में विराजमान थे।

18. आगरा की आबादी ज्यादातर जाटों की है। वे भगवान शंकर को तेजाश्री कहकर पुकारते हैं। इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इण्डिया, 28 जून, 1971 जो जाट विशेषांक था, कहता है कि जाटों के तेज मंदिर होते थे। शिवलिंग के विविध प्रकारों में तेजोलिंग भी एक है। इससे स्पष्ट होता है कि ताजमहल तेजोमहालय अर्थात् शिव का विशाल मंदिर है।

दस्तावेज के साक्ष्य

19. शाहजहाँ का दरबारी वृत्त शाहजहाँनामा अपने खण्ड एक के पृष्ठ 403 पर कहता है कि अतुलनीय वैभवशाली गुम्बदयुक्त एक भव्य प्रसाद को इमारत-ए-आलीशान वा गुम्बज़े (जो राजा मानसिंह के प्रसाद के नाम से जाना जाता था) मुमताज़ को दफनाने के लिए जयपुर के महाराज जयसिंह से लिया गया।

20. ताजमहल के प्रवेश द्वार के साथ लगे पुरातत्वीय शिलाओं पर हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं में लिखा है कि मुमताज़ की कब्र के रूप में शाहजहाँ ने सन् 1631 से 1653 तक ताजमहल का निर्माण करवाया। किन्तु उक्त कथन में किसी ऐतिहासिक आधार का तो उल्लेख ही नहीं। यह उसका एक बड़ा दोष है। दूसरा मुद्दा यह है कि मुमताज़ महल नाम ही झूठा है। मुगली दस्तावेजों में मुमताज़-उल्-जमानी नाम उल्लिखित है। तीसरा मुद्दा यह है कि ताजमहल निर्माण की अवधि

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जो 22 वर्ष कही गई है वह मुगल दरबार के दस्तावेजों पर आधारित न होकर टॅव्हरनिए नाम के एक ऐरे-गैरे फ्रेंच सर्राफ के कुछ ऊटपटाँग, संभ्रमित संस्मरणों से निकाला गया निराधार निष्कर्ष है।

अन्य प्रमाणों का विश्लेषण करने पर टॅव्हरनिए का कथन गलत सिद्ध होता है।

21. अपने पिता शाहजहाँ को लिखा औरंगजेब का पत्र टॅव्हरनिए के दावे को झूठा साबित कर देता है। औरंगजेब का वह पत्र आदाब-ए-आलमगिरी, यादगारनामा और मुरक्का-ई अकबराबादी (सईद अहमद, आगरा से सम्पादित, सन् 1931, पृष्ठ 43, फुटनोट 2) में अन्तर्भूत है। सन् 1652 के उस पत्र में औरंगजेब ने स्वयं लिखा है कि मुमताज की कब्र परिसर की इमारतें सात मंजिलों वाली थी और वे इतनी पुरानी हो गई थीं कि उनमें से पानी टपकता था और गुम्बद के उत्तरी भाग में दरार पड़ी थी। अत: औरंगजेब ने स्वयं अपने खर्चे से उन भवनों को तत्काल मरम्मत करने की आज्ञा देकर शाहजहाँ को सूचित किया कि यथावकाश इन भवनों की व्यापक मरम्मत की जाए। इससे सिद्ध होता है कि शाहजहाँ के समय में ही ताज इतना पुराना हो गया था कि उसकी तत्काल मरम्मत करने की आवश्यकता पड़ी।

22. दिसम्बर 18 सन् 1633 के शाहजहाँ द्वारा महाराजा जयसिंह को भेजे दो पत्र (फर्मान्) कपड़द्वारा नाम के जयपुर के गुप्त विभाग में सुरक्षित हैं। उन्हें आधुनिक क्रमांक 176-77 दिये गये हैं। सारी सम्पत्ति सहित ताजमहल का शाहजहाँ द्वारा अपहरण किये जाने की अपमानकारी घटना उन पत्रों में उल्लिखित होने से जयपुर नरेश की असमर्थता छिपाने के हेतु व पत्र गुप्त रखे गये।

23. राजस्थान के राजपूत रियासतों के ऐतिहासिक दस्तावेज बीकानेर में सरकारी अभिलेखागार में रखे गये हैं। उनमें शाहजहाँ द्वारा जयसिंह को भेजे तीन पत्र हैं। एक चौथा पत्र भी भेजा गया था ऐसा उन तीन

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पत्रों में से एक में उल्लेख है। उनमें जयसिंह को मकराने के संगमरमर तथा संगतराश भेजने के लिए कहा है। ताजमहल और उसके अन्तर्गत सारी सम्पति हड़प करने के पश्चात् उसमें मुमताज की कब्र बनाने और कुरान की आयतें जड़ाने के हेतु शाहजहाँ जयसिंह से ही संगमरमर तथा संगतराश मँगवाने की धृष्टता कर रहा था। यह देखकर जयसिंह को बड़ा क्रोध चढ़ा। उसने न ही पत्रों का कोई उत्तर दिया और न ही संगमरमर या संगतराश भेजे। इतना ही नहीं अपितु आस पास के संगतराश अपने आप भी शाहजहाँ के पास न जा सकें उन्हें मना करवा दिया।

24. मुमताज की मृत्यु के लगभग दो वर्ष के अन्दर शाहजहाँ ने संगमरमर की माँग करते हुए जयसिंह को तीन आदेश भेजे। यदि वास्तव में 22 वर्ष की कालावधि में शाहजहाँ ने ताज निर्माण करवाया होता तो 10 से 15 वर्षों के बाद ही संगमरमर की आवश्यकता पड़ती न कि मुमताज की मृत्यु के तुरन्त बाद। बना-बनाया ताजमहल हथियाने के कारण ही मुमताज़ की मृत्यु के तुरन्त पश्चात् शाहजहाँ को उसमें कुरान जड़ाने के लिए संगमरमर की आवश्यकता पड़ी।

25. इतना ही नहीं, इन तीनों पत्रों में ताजमहल, मुमताज़ और उसके दफन का कोई उल्लेख नहीं है। उसकी लागत एवं पत्थर की मात्रा का भी उनमें उल्लेख नहीं है। ताज को हस्तगत करने के बाद कब्र बनाने तथा आवश्यक मरम्मत के लिए थोड़े से संगमरमर की आवश्यकता पड़ी। क्रुद्ध जयसिंह की मिन्नतें करके प्राप्त होने वाले अल्पस्वरूप संगमरमर से शाहजहाँ द्वारा ताजमहल जैसी विशाल इमारत का समुच्चय निर्माण वैसे भी असम्भव था।

यूरोपियन पर्यटकों के वृत्त

26. पीटर मंडी नाम का एक अंग्रेज पर्यटक शाहजहाँ के काल में आगरा नगर में आया था। इसने निजी संस्मरण लिखे हैं। मुमताज की मृत्यु

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

के पश्चात् एक-डेढ़ वर्ष में ही वह विलायत को लौट गया। तथापि उसने लिखा है कि आगरा नगर तथा आसपास प्रेक्षणीय इमारतों में मुमताज तथा अकबर के दफन-स्थल प्रेक्षणीय हैं।

27. द लायट नाम के हालैण्ड के एक अफसर ने उल्लेख किया है कि आगरा के किले से एक मील की दूरी पर शाहजहाँ काल के पूर्व का ही मानसिंह भवन था। शाहजहाँ के दरबारी इतिवृत 'बादशाहनामा' में उसी मानसिंह भवन में मुमताज को दफनाने की बात लिखी गई है।

28. तत्कालीन फ्रेंच पर्यटक बर्निए ने लिखा है कि ताजमहल के (संगमरमरी) तहखाने में चकाचौंध करने वाला कोई दृश्य था। और उस कक्ष में मुसलमानों के अतिरिक्त किसी अन्य को प्रवेश नहीं करने देते थे। इससे स्पष्ट है कि वहाँ मयूर सिंहासन, चाँदी के द्वार, सोने के खम्भे इत्यादि थे और ऊपरके अष्टकोनी कक्ष में शिवलिंग पर पानी टपकने वाला सुवर्ण घट और संगमरमरी जालियों में जवाहरात इत्यादि थे। इतनी सारी सम्पति हड़प करने के उद्देश्य से ही तो शाहजहाँ ने मृत मुमताज को उस मानसिंह के तेजोमहल में ही दफनाने की धृष्टता तथा दुराग्रह किया ताकि उस बहाने उस इमारत पर कब्जा कर अन्दर की सम्पति लूटी जा सकें।

29. i महाराष्ट्रीय ज्ञानकोष के अनुसार ताजमहल निर्माण कार्य 1631 में आरम्भ होकर 1643 में पूर्ण हुआ। अर्थात निर्माण कार्य 12 वर्ष में पूर्ण हुआ। जबकि प्रचलित निर्माण अवधि 22 वर्ष ।

ii एक मुस्लिम विवरण के अनुसार मुमताज की मृत्यु 1631 में हुई। ताजमहल निर्माण 1631 में आरम्भ होकर 1648 में पूर्ण हुआ। निर्माण अवधि 17 वर्ष। जबकि प्रचलित निर्माण अवधि 22 वर्ष ।

अपनी प्रिय पत्नि की मृत्यु होते ही उसका शोक न मनाकर शाहजहाँ विदेशों से मानचित्र बनवाने में जुट गया। क्या यह सम्भव है? क्या यह उचित लगता है? मानचित्र के लिए दूरस्थ विदेशों में सन्देश भेजे गए। वहाँ से बनकर मानचित्र आए। पसन्द भी किए

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

गए। तदनुसार स्थान ढूंढा गया। निर्माण सामग्री मंगवाई गई। सब कार्य छोड़ कर केवल ताजमहल बनाना शेष रहा। क्या यह सम्भव है?

iii अब मुख्य मुद्दे पर आएं। ताजमहल की निर्माण अवधि गोरे व काले अंग्रेजों के अनुसार 22 वर्ष है। जो उपर वर्णित अवधियों से एकदम अलग है। इस अवधि का आधार है टॅव्हरनिए नाम का फ्रांस का एक सर्राफ जिसने अपनी यात्रा टिप्पणी में उल्लेख किया है कि " शाहजहाँ ने मुमताज़ को ताज-इ-मकान के निकट दफनाने का कारण यह था कि वहाँ आने वाले विदेशी यात्री उस दफन स्थल की तारीफ करें। आगे वह लिखता है कि वह ताज-इ-मकान छह चौक वाला *बाजार* था। लकड़ी न मिलने के कारण शाहजहाँ को कमानों को ईंटों के ही आधार देने पड़े। कब्र पर जो रकम खर्च हुई उसमें मचाण का खर्चा सर्वाधिक था। कब्र का निर्माण-कार्य मेरी उपस्थिति में आरम्भ होकर मेरी उपस्थिति में ही समाप्त हुआ। बीस हजार मजदूर लगातार 22 वर्ष काम करते रहे।" टॅव्हरनिए के पूर्वोक्त कथन का इतिहासकारों ने गलत अर्थ लगाया है। ताज-इ-मकान के निकट का अर्थ उसके अन्दर कैसे हो गया। दूसरे वह ताज़-इ-मकान को छः मन्ज़िल का कहना चाह रहा है या बाज़ार को। टॅव्हरनिए को भारतीय भाषाओं का ज्ञान न होने के कारण वह बाजार को ही ताजमहल समझा। उस बाजार में आने वाले विदेशी यात्री जिस मानसिंह के मन्दिर को दंग होकर देखते थे उसमें शाहजहाँ ने मुमताज को इसी उद्देश्य से दफनाया कि उस दफनस्थल का सर्वत्र बोलबाला हो। इससे यह बात स्पष्ट है कि एक बड़ा सुन्दर मानसिंह महल वहाँ आरम्भ से ही बना था। वास्तव में ताज-इ-मकान (उर्फ ताजमहल यानि तेजोमहालय) यह उस इमारत का नाम है जिसमें अब मुमताज की कब्र है। ऐसा स्वयं शाहजहाँ के बादशाहनामे में वर्णन है कि वह अति सुन्दर प्रेक्षणीय गुम्बद वाली इमारत थी। तथापि एक पराए अनजान सर्राफ यात्री के नाते टॅव्हरनिए बाहर के बाजार को ही ताज-इ-मकान

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

समझकर उसके निकट वाली मुमताज की कब्र विदेशी यात्रियों का मन लुभाया करती थी ऐसा लिखता है। मचाण के लिए जिस शाहजहाँ को फटटे, खम्भे आदि प्राप्य नहीं थे वह भला संगमरमरी ताजमहल क्या बनवाएगा! कमानों के ऊपर लगी मूर्तियाँ, संस्कृत शिलालेख आदि उतारकर वहाँ कुरान जड़ देने के लिए कमानों को हजारों ईंटों का आधार देना पड़ा। अत: एक प्रकार से बहुत सी ईंटों को चौड़ी दीवार के आकार में तेजोमहालय के चारों ओर गुम्बद तक खड़ी करनी पड़ी। लकड़ियों पर खड़े होकर कुरान जड़ने का खर्चा मामूली था। उसकी तुलना में हजारों ईंटों का चौड़ा उत्तंग मचाण खड़ा करना बड़ा खर्चीला कार्य था। अत: टॅव्हरनिए ने ठीक ही लिखा है कि कब्र पर जितना खर्चा हुआ उसमें मचाण का खर्चा अत्याधिक था। यदि शाहजहाँ संगमरमरी ताजमहल सचमुच बनाता तो उसकी तुलना में मचाण का खर्चा अत्यल्प होता। टॅव्हरनिए ने लिखा है कि ताजमहल का निर्माण-कार्य उसकी उपस्थिति में ही आरम्भ हुआ और समाप्त हुआ। मुमताज़ सन् 1631 के जून में मरी। किन्तु टॅव्हरनिए भारत में पहली बार 1641 में पहुँचा। अत: मुमताज़ की कब्र का कार्य टॅव्हरनिए की उपस्थिति में आरम्भ हुआ यह कथन ही झूठा साबित होता है। उसी प्रकार वह निर्माण-कार्य 22 वर्षों में समाप्त हुआ यह टॅव्हरनिए की टिप्पणी भी झूठी है क्योंकि टॅव्हरनिए भारत में लगातार 22 वर्ष कभी रहा ही नहीं। इसी कारण टॅव्हरनिए की टिप्पणी विश्वास योग्य नहीं है। कुछ इतिहासकारों का प्रकट मत ठीक ही है कि उसका यात्रा-वर्णन गपशप और अपनी बढ़ाई के विवरण से भरा है, उस पर विश्वास नहीं करना चाहिए। हजारों मजदूर काम पर अवश्य लगे थे किन्तु वे ताजमहल के लिए नहीं बल्कि कब्र वाली मंजिल को छोड़कर शेष सात मंजिली इमारतों के सैकड़ों कमरे, छज्जे, जीने, द्वार, खिड़कियाँ आदि चुनवाकर बन्द करवाने में लगे थे। इस प्रकार स्वयं उसकी टिप्पणी भ्रमों से भरी है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सभी विदेशी यात्रीयों के संस्मरण व सभी भारतीय प्रमाण बिल्कुल अलग अलग हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि शाहजहाँ ने बना-बनाया ताजमहल जयसिंह से हड़प लिया। गोरे अंग्रजों ने मनघड़ंत इतिहास लिखवाया है और काले अंग्रेज इससे राजनीति करते हैं।

30. जे०ए० मॅण्डेलस्लो ने मुमताज की मृत्यु के सात वर्ष पश्चात् Voyoges and Travels Into the East Indies नाम के निजी पर्यटन के संस्मरणों में आगरे का उल्लेख तो अवश्य किया है किन्तु ताजमहल निर्माण का कोई उल्लेख नहीं किया। टॅव्हरनिए के कथन के अनुसार 20 हजार मजदूर यदि 22 वर्ष तक ताजमहल का निर्माण करते रहते तो मॅण्डेलस्लो भी उस विशाल निर्माण-कार्य का उल्लेख अवश्य करता। आलीशान भवन बन रहा हो पर्यटक वर्णन भी न करे, सम्भव नहीं।

31. ताजमहल के हिन्दू निर्माण का साक्ष्य देने वाला काले पत्थर पर उत्कीर्ण एक संस्कृत शिलालेख लखनऊ के वस्तु-संग्रहालय (Museum) के ऊपरितम मंजिल में धरा हुआ है। वह सन् 1155 का है। उसमें राजा परमर्दिदेव के मन्त्री सलक्षण द्वारा यह कहा गया है कि " स्फटिक जैसा शुभ्र इन्दुमौलीश्वर (शंकर) का मंदिर बनाया गया। (वह इतना सुन्दर था कि) उसमें निवास करने पर शिवजी को कैलाश लौटने की इच्छा ही नहीं रही। वह मन्दिर आश्विन शुक्ल पंचमी, रविवार को बनकर तैयार हुआ।" ताजमहल के उद्यान में काले पत्थरों का एक मण्डप था ऐसा एक ऐतिहासिके उल्लेख है। उसी में वह संस्कृत शिलालेख लगा था ऐसा अनुमान है। उस शिलालेख को कनिंगहम ने बटेश्वर शिलालेख जान-बूझकर कहा है ताकि इतिहासज्ञों को भ्रम में डाला जा सके और ताजमहल के हिन्दू निर्माण का रहस्य गुप्त रहे। आगरा से 70 मील की दूरी पर बटेश्वर में उस शिलालेख के पाए जाने का विवरण कहीं नहीं मिलता। ऐसा विवरण न मिलने पर भी बटेश्वर शिलालेख कहना अंग्रेजी षड्यन्त्र है।

32. शाहजहाँ ने ताजमहल परिसर में जो तोड़-फोड़ और अदल-बदल

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

की उसका एक सूत्र सन् 1874 में प्रकाशित पुरातत्व खाते (आर्किओलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया) के वार्षिक वृत के चौथे खण्ड में पृष्ठ 216-217 पर अंकित है। उसमें लिखा है कि हाल में आगरा के वस्तुसंग्राहालय के आँगन में जो चौखुंटा काले बसस्ट प्रस्तर का स्तम्भ खड़ा है वह स्तम्भ तथा उसी की जोड़ी का दूसरा स्तम्भ, उसके शिखर तथा चबूतरे सहित कभी ताजमहल के उद्यान में प्रस्थापित थे। काले रुद्र पत्थर व संस्कृत शिलालेख के पत्थर एक से ही हैं। लखनऊ के वस्तु संग्रहालय में जो संस्कृत शिलालेख है वह भी उसी काले पत्थर का है इससे स्पष्ट है कि वह भी ताजमहल के उद्यानमण्डप में ही प्रदर्शित था।

गज प्रतिमाएँ

33. ताजमहल प्रांगण में जहाँ टिकट मिलते हैं उस बड़े चौक को हाथी चौक कहते हैं। इसका कोई कारण इतिहासकार नहीं देते। हम सहज ही अनुमान लगा सकते हैं कि अन्य मन्दिरों की तरह यहाँ भी लाल पत्थर के विशाल प्रवेशद्वार के दोनों ओर बड़ी गज प्रतिमाएँ थीं जो शाहजहाँ ने हटवा दीं। ऐसे गज प्रतिमाओं की शुण्डें नोक पर जुड़ी होती हैं। उसे गजलक्ष्मी कहा जाता है। Thomas Twining की Travels in India A Hundred years ago नाम की पुस्तक है। उस पुस्तक के पृष्ठ 191 पर उल्लेख है कि नवम्बर 1794 में Twining ताज-इ-महल के प्रांगण में पालकी से उतरा और कुछ पैड़ियाँ चढ़कर वह (ताज-उद्यान के) भव्य द्वार पर पहुँचा। उस द्वार के सम्मुख यह हाथी चौंक था।
34. शाहजहाँनामा में इसका वर्णन है कि ताजमहल के बाहरी कमानों पर कुरान के 14 अध्याय जड़ दिये गये हैं। परन्तु इसमें वह ताजमहल के निर्माण की बात नहीं लिखता। उसने वैसा कोई उल्लेख इसलिए नहीं किया कि उसने ताजमहल बनवाया ही नहीं।
35. ताजमहल बनवाना तो दूर ही रहा, शाहजहाँ ने जहाँ-तहाँ नीले फारसी अक्षरों में कुरान जड़वाकर ताजमहल की चन्द्रमा जैसी धवल आभा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मलीन कर दी। अमानत खान शिराझी ने वे फारसी अक्षर लिखे ऐसा बाहरी विशाल द्वार पर शिलालेख है। ताजमहल के संगमरमरी चबूतरे पर जो भव्य प्रवेश द्वार है उसकी चोटी पर जो कुरान की आयतें जड़ी हुई हैं उन्हें ध्यान से देखने पर पता चलेगा कि वे रंग-बिरंगे टुकड़े-टाकड़ों से बाद में गढ़ दी गई हैं। यदि शाहजहाँ स्वयं ताजमहल का निर्माता होता तो भिन्न-भिन्न छटाओं वाले टुकड़ों से कुरान न जड़वा कर एक ही तरह का संगमरमर जड़वाता।

कार्बन-14 जाँच

36. शाहजहाँ से पूर्व बनी ताजमहल की इमारत बड़ी प्राचीन है और वह हिन्दू ग्रन्थों के आधार पर बनाई गई है यह मेरा संशोधन पढ़-कर एक अमेरिकन प्राध्यापक (Mr.Marvin Mills) भारत आया था। ताजमहल के पिछवाड़ें में यमुना के किनारे पर ताजमहल का एक प्राचीन टूटा हुआ लकड़ी का द्वार है उसका एक टुकड़ा वह ले गया। उस टुकड़े की उस विद्वान ने Newyork की एक प्रयोगशाला में भौतिक Carbon-14 जाँच कराई। उस जाँच में भी ताजमहल शाहजहाँ से सैकड़ों वर्ष पूर्व बनी इमारत सिद्ध हुई।

स्थापत्य के साक्ष्य

37. मिसेस केनोयेर, ई0बी0हवेल और सर डब्ल्यू0 डब्ल्यू0 हण्टर जैसे प्रख्यात पाश्चात्य विद्वानों का मत है कि ताजमहल हिन्दू मंदिर की प्रणाली के अनुसार ही बनाया गया है। हवेल ने लिखा है कि जावा के प्राचीन चण्डी सेवा मंदिर की रूपरेखा जैसी ही ताज की रूपरेखा है।

38. ताजमहल के शिखर पर चार कोनों में चार छत्र और बीच में गुम्बद यह हिन्दू पंचरत्न की कल्पना है। इसी प्रकार हिन्दू परम्परा में पंचगव्य, पंचामृत, पंचपात्र, गाँव के पंच आदि होते हैं।

39 ताजमहल के चार कोनों पर खड़े संगमरमर के चार स्तम्भ हिन्दू धार्मि -क परम्परा के अंग हैं। वे रात को प्रकाश स्तम्भ व दिन को पहरेदारों के निगरानी के स्तम्भ के नाते उपयोग में लाये जाते थे। इस

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

प्रकार के स्तम्भ प्रत्एक पूजास्थल की चतुस्सीमा निर्धारण हेतु लगाए जाते हैं। हिन्दुओं के विवाह एवं सत्यनारायण पूजा वेदी के चार कोनों पर लगाये जाने वाले चार स्तम्भ आज भी इनके साक्षी हैं। किसी पूजा-स्थान या मंगल-स्थान के चार कोनों पर स्तम्भ खड़े करना पवित्र वैदिक प्रथा है।

40. ताजमहल का अष्टकोणी आकार हिन्दू विशिष्टता है। हिन्दू परम्परा में आठ दिशाओं के आठ दैवी पालक नियुक्त हैं जो अष्टदिक्पाल कहलाते हैं। स्वर्ग तथा पाताल मिलकर दस दिशा निर्देशित हो जाती हैं। किसी वस्तु या वस्तु का शिखर आकाश का निर्देश करता है तो नींव पाताल की प्रतीक होती है अत: पृष्ठ भाग पर इमारत अष्टकोणी करने से दस दिशा निर्देशित हो जाती हैं। राजा या परमात्मा का अधिकार दस दिशाओं में माना जाता है। अत: राजा से सम्बन्धित या देवों से सम्बन्धित इमारत या तो स्वयं अष्टकोणी होती है या उसमें कहीं-न-कहीं अष्टकोणी आकार बनाये जाते हैं। इसी नियम के अनुसार ताजमहल का आकार अष्टकोना है। दिल्ली की तथाकथित जामा मस्जिद के सारे द्वार-मार्ग अष्टकोणीय हैं। वह भी अपहृत हिन्दू मंदिर है।

41. ताजमहल के गुम्बद पर जो अष्टधातु का कलश खड़ा है वह त्रिशूल के आकार का पूर्ण कुंभ है। उसके मध्य दण्ड के शिखर पर नारियल की आकृति बनी है। नारियल के तले दो झुके हुए आम के पत्ते और उनके नीचे कलश दर्शाया गया है। चन्द्रकोर के आकार के कमानदार लौहदंड पर कलश आधारित है। उस चन्द्रकोर के दो नोक और उनके बीचोंबीच नारियल का शिखर मिलाकर त्रिशूल का आकार बना है। हिमालय की घाटियों में बने हिन्दू या बौद्ध मंदिरों पर ऐसे ही कलश लगे हैं। ताजमहल की चार दिशाओं में बने उत्तुंग संगमरमरी प्रवेशद्वारों के कमानों के नोकों पर भी रक्त कमलरूपी त्रिशूल अंकित हैं। असावधानी से जल्दबाजी में लोग उस त्रिशूलाकृति

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कलशदंड को इस्लामी चाँद कहते आ रहे हैं। गुम्बद पर चढ़कर जिन कर्मचारियों ने, उस कलशदंड का समीप से निरीक्षण किया है वे बताते हैं कि उस अष्टधातु के कलश पर 'अल्लाह' ऐसे अरबी अक्षर खुदे हैं और Taylor यह आंग्ल नाम अंकित है। यदि वह ऐसा ही है तो वह कनिंगहम की हेराफेरी हो सकती है। सेना का इंजीनियर होने से कनिंगहम के टेलर नाम के किसी अधीनस्थ ने गुम्बद पर चढ़कर ज्वाला फैंकने वाले स्टोव उपकरण से कलश को गरम कर उस पर अल्लाह तथा Taylor यह दो नाम गढ़ दिये। ताकि लोग ताजमहल को शंकायुक्त इमारत ही समझें। किन्तु संगमरमरी ताजमहल के पूर्व में लाल पत्थर के आँगन में उस कलश की जो पूर्णाकृति जड़ी है उसमें अल्लाह और Taylor नाम नहीं है। इससे कनिंगहम के षड्यन्त्र का भेद खुल जाता है। पूर्व दिशा का वैदिक परम्परा में महत्त्व होने से पूर्वी आँगन में कलशदंड की आकृति अंकित रहना ताजमहल परिसर के हिन्दुत्व का एक और प्रमाण है।

असंगत तथा भ्रामक तथ्य

42. संगमरमरी ताजमहल के पूर्व में तथा पश्चिम में एक जैसे दो भवन हैं। पश्चिम दिशा वाली इमारत को शाहजहाँ के समय से मुसलमान लोग मसजिद कह रहे हैं। उसमें एक भी मीनार नहीं है सम्भवत: यह तथा-कथित मस्जिद एकमात्र ही है जिसमें मिनार नहीं जबकि कब्र में मिनार नहीं होती वहां (ताजमहल के) चार कोनों पर चार एक समान मीनार क्यों? ऐसे मुद्दों का लोग विचार नहीं करते और यदि पूर्ववर्ती इमारत मस्जिद नहीं है तो उसका आकार पश्चिम वाली इमारत के समान क्यों है? यदि आकार समान हो तो इमारतों का उपयोग भी समान होना चाहिए। अत: जब पूर्ववर्ती इमारत मस्जिद नहीं है तो उसके जोड़े वाली पश्चिम की इमारत भी मस्जिद नहीं हो सकती। वास्तव में दोनों भवन तेजोमहालय मंदिर की दो धर्मशालाएँ हैं।

43. पश्चिम वाली उस तथाकथित मस्जिद से लगभग 50 गज पर नक्कारखाना

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

है। यदि वह इमारत मूलत: मस्जिद होती तो उसके इतने निकट नक्कारखाना नहीं बनाया जाता क्योंकि कब्र में नक्कारखाने का तो कोई काम ही नहीं। क्योंकि मृतात्मा को शान्ति की आवश्यकता होती है न कि शोर की। और नगाड़ा बजाकर मृत मुमताज को जगाने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। इसके विपरीत, हिन्दू मंदिर या महल में नक्कारखाना होना आवश्यक है क्योंकि श्रुतिमधुर शांति भक्ति संगीत से ही प्रात:-सायं दैनिक हिन्दू जीवन आरम्भ होता है।

44. केन्द्रीय अष्टकोने कक्ष में जहाँ मुमताज की नकली कब्र है (और जहाँ उससे पूर्व शिवलिंग होता था) उसके द्वार में प्रवेश करने से पूर्व प्रेक्षक दाएँ-बाएँ दीवारों पर अंकित संगमरमरी चित्रकला देखें। उसमें शंख के आकार के पत्ते वाले तथा ॐ आकार के फूल दिखेंगे। कक्ष के अन्दर संगमरमरी जालियों का जो अष्टकोना आलय बना है उन जालियों के किनारे में गुलाबी रंग वाले कमल जड़े हैं। यह सारे हिन्दू चिन्ह हैं।

45. मुमताज की नकली कब्र के स्थान पर कभी शिवजी का तेजोलिंग होता था। उसके पाँच परिक्रमा मार्ग हैं। संगमरमरी जाली के अन्दर से पहली परिक्रमा होती थी। जाली के बाहर से दूसरी परिक्रमा होती थी। तीसरी परिक्रमा उस कक्ष के बाहर से होती थी। चौथी परिक्रमा संगमरमरी चबूतरे से होती थी। पाँचवीं परिक्रमा लाल पत्थर के आँगन से कि जा सकती थी।

46. ताजमहल के गर्भगृह के ऊपरले तथा निचले कक्षों के द्वार चाँदी के थे। शिवलिंग के चारों ओर रत्नजड़ित सोने के खम्भे लगे थे। सोने के घट से शिवलिंग पर जल बिन्दुओं का अभिषेक होता रहता था। संगमरमरी जाली में रत्न जड़े होते थे। मयूर सिंहासन भी यहीं था।

इतनी सारी सम्पत्ति हड़प करने के लालच से ही शाहजहाँ ने मुमताज को ताजमहल में ही दफनाने की चाल चली। जयपुर नरेश जयसिंह मुगलों की सैनिक टुकड़ी का सेनापति भी था और आगरा से

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

250 मील दूर रहता था। आगरा तो मुगलों की राजधानी थी। अत: एकाएक घेरा डालकर जब मुगली सेना ने ताजमहल स्थित सारी सम्पत्ति हड़प करना आरम्भ किया तब जयसिंह देखता ही रह गया।

47. शाहजहाँ के शासन काल में जो यूरोपियन प्रवासी आगरा आये थे उनमें एक अंग्रेज पीटरमंडी था। मुमताज की मृत्यु के पश्चात् केवल एक या डेढ़ वर्ष में वह इंग्लैंड वापस लौट गया। तथापि उसने अपने संस्मरणों में लिख रखा है कि मुमताज की कब्र के चारों ओर रत्नों से जड़े सोने के खम्भे लगे थे। यदि ताजमहल 22 वर्षों में बना होता तो मुमताज की मृत्यु से एक वर्ष के अन्दर वहाँ सोने के खम्भे कैसे लगे होते? इससे सिद्ध होता है कि वहाँ स्थित शिवलिंग के ऊपर जब मुमताज के नाम की कब्र बनाई गई तो शिवलिंग के चारों ओर के खम्भे खड़े रह गये। अब वे वहाँ नहीं हैं। इससे स्पष्ट है कि उन्हें उखाड़कर शाहजहाँ के खजाने में जमा करा दिया गया। इतनी सारी धन-दौलत समेत तेजोमहालय का हड़प किया जाना शाहजहाँ और जयसिंह के बीच बड़े विवाद का कारण बन गया।

48. सोने के खम्भे के आधार जहाँ जमीन में गड़े थे वहाँ कब्र के चारों ओर वे सुराख बन्द किये जाने के निशान बारीकी से देखने पर अभी भी दिख जाते हैं। उनसे पता चलता है कि वे चार चकोर खम्भे पूजास्थल की चतुस्सीमा निर्धारण हेतु लगाए गए थे।

49. कब्र के ऊपर गुम्बद के मध्य से अष्टधातु की एक जंजीर लटक रही है। शिवलिंग पर जलसिंचन करने वाला सुवर्ण कलश इसी जंजीर से टँगा था। उसे निकालकर जब शाहजहाँ के खजाने में जमा करा दिया गया तो वह निकम्मी लटकी जंजीर भद्दी दीखने लगी। ऐसा कहा जाता है कि गवर्नर जनरल लार्ड कर्जन ने वहाँ एक दीप उस जंजीर में लटकवा दिया। वह दीप अभी भी वहाँ लटका हुआ है।

50. उस घट से जो बूँद-बूँद जल शिवलिंग पर टपकता था वह शाहजहाँ द्वारा घट हड़प होने के पश्चात् बन्द हो गया। तथापि बूँद टपकने की

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बात लोगों की स्मृति में बनी रही। हिन्दुओं के मन से तेजोमहालय हटाने के लिए अंतत: शाहजहाँ का आँसु टपकने की बात जानबूझ कर चलाई गई। कब्र के ऊपर अब आँसू न तो टपकता है न ही यह सम्भव है। परन्तु हज़ारों बार बोला गया झूठ सच ही माना जा रहा है।

51 शाहजहाँ के आँसू गत सैकड़ों वर्षों से लगातार मुमताज़ की कब्र पर टपकते रहने की बात एकदम असंगत एवं अविश्वसनीय है। पता नहीं लोग ऐसी अनहोनी को कैसे दोहराते आ रहे हैं। यदि ऐसे कोई आँसू टपकते तो कब्र के पास बैठने वाला मूजावर एक कपड़ा लेकर सर्वदा गीली जमीन पोंछता हुआ दिखाई देता या कब्र पर पानी का निशान होता। शाहजहाँ कोई साधु, संन्यासी या योगी तो था नहीं कि उसकी आत्मा मृत्यु के पश्चात् आँसु टपकाने का चमत्कार कर सके। शाहजहाँ तो एक क्रूर अत्याचारी रंगीला बादशाह था। एक मुद्दा और यह है कि ताजमहल में एक के ऊपर एक ऐसे दो गुम्बज होने से पानी अन्दर टपक ही नहीं सकता। कब्र के पास खड़े होकर अन्दर से जो गुम्बद दीखता है वह छत के ऊपर उलटी कड़ाही के समान बना हुआ है। बाहर से जो गुम्बद दीखता है वह टोपी की तरह उस गुम्बद पर ढका हुआ है। जिस गुम्बद की गोलाई पर बन्दर भी नहीं ठहर सकता वहाँ शाहजहाँ की आत्मा या शाहजहाँ का भूत गुम्बद के ऊपर बैठकर मुमताज़ के लिए आँसु कैसे बहा सकेगा? और यदि शाहजहाँ के भूत को या आत्मा को रोना ही हो तो वह अन्य प्रेक्षकों जैसे उत्तुंग द्वार से प्रवेश कर कब्र पर सिर पटक-पटककर रोना पसन्द करेगा या धूप तथा बरसात में फिसलने वाले गुम्बद की गोलाई पर बैठकर रोना चाहेगा? गुम्बद में कोई छेद ही नहीं है तो आँसु टपकेंगे कैसे? और यदि कोई छेद होता भी तो वर्षा का पानी भी तो बड़ी मात्रा में अन्दर आ गिरता। सामान्य लोगों के भोलेपन का यह एक लाक्षणिक उदाहरण है। कही-सुनी बातों की छानबीन किए बिना

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

उन्हें मान लेने की लोगों की आदत होती है।

52. कहते हैं कि किसी कारीगर ने क्रुद्ध होकर गुम्बद पर हथौड़ा मारा। उस प्रहार से ऐसा जादुई छिद्र गुम्बद में हुआ कि उससे वर्ष में एक बार या प्रत्येक पूर्णिमा या अमावस्या के दिन शाहजहाँ का एक ही आँसु बराबर मध्य-रात्रि के समय मुमताज की कब्र के ऊपर टपकता है। क्रोध में किये प्रहार से गुम्बद में क्या ऐसा नपा-तुला छिद्र होगा कि जो अमावस्या या पूर्णिमा के दिन आकाश में बादल नहीं भी तो भी एक बूँद अवश्य टपकायेगा। गनीमत यह है कि उस अफवाह को दोहराने वाले व्यक्ति यह नहीं कहते कि शाहजहाँ का आँसू कब्र में धरे मुमताज़ के शरीर के किस भाग पर गिरता है। हथौड़े से गुम्बद में छिद्र किए जाने की बात जो करते हैं वे यह नहीं जानते कि गुम्बद की दीवार 16 फीट मोटी है। एक या दो बार हथौड़ा मारने से उसमें छेद नहीं हो सकता। और ऐसी बात कही जाती है कि शाहजहाँ द्वारा ताजमहल के लिए पैसा पानी जैसे बहाया गया तो किसी कारीगर के नाराज होने का प्रश्न ही नहीं था। यदि कोई कारीगर क्रुद्ध भी हुआ तो विवाद करने के लिए वह बादशाह तक पहुँच ही नहीं सकता और यदि विवाद हुआ भी तो बादशाह नीचे बगीचे में और नाराज कारिगर ऊपर गुम्बद पर हथौड़ा मारने पर तुला हुआ इतनी दूरी पर से होना असम्भव है। जहाँ तक आँसु टपकने की बात है हम पहले ही बता चुके हैं कि शिवलिंग के ऊपर टपकने वाला जल शाहजहाँ ने जब से बन्द करवाया तो हिन्दू जनता के मन से उस कलश की स्मृति को हटाने के लिए मुसलमानों ने शाहजहाँ का आँसु टपकाने की बात चला दी।

मनगढ़न्त शाहजहानी कथा में शाहजहाँ को प्रेमी सिद्ध करने के लिए अफवाह यह फैलाई गयी कि ताजमहल बहुत लुभावना बना है ऐसा दीखने पर वे कारीगर अन्य किसी के लिए उतना सुन्दर ताजमहल न बना पाएँ इस हेतु शाहजहाँ ने उनके हाथ कटवाए।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कारीगरों के हाथ कटने की घटना तो सही है किन्तु उसे जो प्रेम का रंग चढ़ाया गया है, वह झूठा है। क्या एक प्रेमी हृदय ऐसा जुल्म कर सकता है, असम्भव। किसी रईस के लिए कोई कारीगर यदि एक सुन्दर वस्तु बनाते हैं तो उन कारीगरों को परितोषित देकर सम्मानित किया जाता है। उलटा हाथ कटवाने का दण्ड देकर उन्हें अपमानित तथा अपंग बनाना घोर पाप है। सही बात तो यह थी कि ताजमहल का हिन्दू परिसर हथियाने के पश्चात् सात में से छः मंजिलों के सैकड़ों कक्ष, जीने, छज्जे, द्वार, खिड़कियाँ आदि बन्द करवाने के लिए शाहजहाँ कंजूस होने के कारण वह ताजमहल को कब्रस्थान में रूपान्तरित करने के लिए अपने पल्ले से एक कौड़ी भी खर्च नहीं करना चाहता था। अतः शाहजहाँ की आज्ञा से रोज मुगल सैनिक आगरा नगर में चक्कर लगाकर जो भी गरीब लोग बेकार खड़े या घूमते मिलते उन्हें पकड़कर ताजमहल परिसर में ला पटकते और तेजोमहालय मंदिर परिसर को कब्रस्थान में बदलने के काम पर लगा देते। उन्हें वेतन भी नहीं दिया जाता। केवल दाल-रोटी देकर काम करवा लेते। उन पर देखरेख करने वाले मुकादम दाल-रोटी का आधा भाग छीन लेते। इस प्रकार उन मजदूरों को आधा पेट काम करना पड़ा। बाल-बच्चों के लिए वे कुछ कमा नहीं पाते थे। अतः ताजमहल को बन्द कराने का कार्य 20-22 वर्ष शनैः-शनैः चलता रहा। ऐसी अवस्था में मजदूर लोग या तो भाग जाते या बलवा कर उठते। उनके उस विद्रोह को दबाने के हेतु शाहजहाँ ने उनके हाथ कटवाये।

अतः बूँद टपकने की तथा हाथ कटवाने की घटनाएँ तो सही हैं किन्तु उन्हें शाहजहाँ-मुमताज का जो प्रणयरंग चढ़ाया जाता है वह एक ऐतिहासिक वंचना है।

53. उतना सुन्दर ताजमहल और किसी के लिए न बने ऐसी आशंका शाहजहाँ को होना असम्भव था। क्योंकि शाहजहाँ-मुमताज़ जैसे

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

असीम प्रेम की बात कितने जोड़ों को लागू हो सकती थीं? शाहजहाँ जैसे उस समय कितने लोग विधुर रहे होंगे? क्या उनके पास भी पत्नी के शव पर बहाने के लिए करोड़ों रुपयों की पूँजी थी? क्या वे इतनी पूँजी कब्र बनाने में व्यर्थ गँवाने की इच्छा या क्षमता रखते थे? और यदि कोई हरी का लाल ताजमहल से अधिक विशाल तथा सुन्दर कब्र बनाने की सोचता भी तो क्या उसे बादशाही आज्ञा से चुप कराया नहीं जा सकता था? अत: हाथ कटवाने का कारण केवल वही विद्रोह ही हो सकता है।

उस कथा में और एक असंगति यह है कि एक तरफ तो मुमताज़ की मृत्यु से शोकदग्ध शाहजहाँ जो कभी अपने भाईयों को मार बादशाह बना था अब अति कोमलहृदयी हो गया था ऐसा ढोंग किया जाता है जबकि दूसरी ओर वही बादशाह सुन्दर मकबरा बनाने वाले कुशल कारीगरों को इनाम देने के बजाय उनके हाथ कटवाने की उलटी, क्रूर तथा दुष्ट कार्यवाही करता हुआ बताया जाता है।

54. संगमरमरी चबूतरे के तहखाने में (जहाँ मुमताज की मूल कब्र बताई जाती है) उतरते समय सीढ़ियाँ उतरने के पश्चात् एक आला-सा बना हुआ है। उसके दाएँ-बाएँ की दीवारें देखें। वे बेजोड़ संगमरमरी शिलाओं से बन्द हैं। उससे पता चलता है कि तहखाने के जो सैकड़ों अन्य कक्ष बन्द हैं उनमें पहुँचने के जीने यहाँ से निकलते थे। वे शाहजहाँ ने बन्द करवा दिये।

55. लाल पत्थर के आँगन में जूते उतारकर जब प्रेक्षक सीढ़ियाँ चढ़कर संगमरमरी चबूतरे पर पहुँचते हैं तो उनके पैरों के आगे एक चौकोर शिला दिखेगी। उस पर पैर थपथपायें तो अन्दर से खोखली-सी आवाज आएगी। वह शिला यदि निकाली जाए तो खुले चबूतरे के अन्दर जो सैकड़ों कक्ष हैं उनमें उतरने के जीने दिखाई देंगे ऐसा अनुमान है। क्योंकि सात मंजली कुआँ तथा मस्जिद कही जाने वाली इमारत की छत के ऊपर भी एक डंडे से थपथपाने पर जब अन्दर से

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

खोखली आवाज़ आई तब वहाँ के पुरातत्वीय कर्मचारी (आर० के० वर्मा) ने वह शिला निकलवाई तो उसमें अन्दर मोटी दीवार के गहराई में उतारता हुआ एक जीना दिखा। उससे ज्यों ही वे लोग अन्दर उतरने लगे तो अन्दर नागों का एक जोड़ा फन उठाये हुए दीख पड़ा। तब वर्मा जी तुरन्त वापस ऊपर लौट आए।

56. ताजमहल में जो सात मंजली बावली महल है तथा संगमरमरी ताजमहल के दाएँ-बाएँ जो दो सात मंजली इमारतें हैं उनमें से एक मस्जिद कही जा रही है। उनमें प्राचीन पद्धति के शौचकूप उर्फ पाखाने बने हैं। वे प्रेक्षकों से छिपाये गये हैं। उनसे सिद्ध होता है कि यहाँ बहुत से लोग आते रहते थे। ये भवन, हिन्दू परम्परा के अनुसार बनने वाले किसी भी मन्दिर के साथ बनने वाली धर्मशाला ही हो सकते हैं।

57. मस्जिद कहलाने वाली इमारत के साथ जो सातमंजिला कुआँ है। जहाँ तक मुसलमानों का सवाल है जीवित अवस्था में भी जब इतना जल प्रयोग नहीं करते तो मृत मुमताज़ के शव के लिए सात मंजिले कुएँ की क्या आवश्यकता थी? किन्तु ताजमहल तेजोमहालय नाम का हिन्दू मंदिर व इसके साथ धर्मशाला होने से उसमें सदैव विपुल जल की आवश्यकता पड़ती थी।

प्रत्एक बड़े मन्दिर में भगवान की मूर्तियों के गहने इत्यादि बड़ी संख्या में होते हैं। उन्हे भगवान का खजाना कहा जाता है। खजाना कई जगह बाँट कर रखा जाता है। सात मंजिलों वाले कुएं का एक यह भी महत्व है। उसमें जल-स्तर वाली मंजिल में खजाना रखा जाता था। इस प्रकार खजाने वाली बावली बनाना वैदिक क्षत्रिय परम्परा थी। ऐसे खजाने वाले कुएँ कई जगह होते थे।

पेशवाओं का एक ऐसा ही कुआँ पुणे नगर में है। कहा जाता है कि इसमें जल-स्तर के साथ वाली मंजिल में तिजोरियाँ होती थीं। युद्ध काल में यदि शत्रु की विजय होती दिखती तो खजाना न बचा सकने की हालत में तिजोरियाँ कुएँ में ढकेल दी जातीं। ताकि खजाना शत्रु

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

के हाथ न लगे। गुप्तचरों द्वारा बाद में चुपके से या उस परिसर को पुनः जीत लेने पर तिजोरियाँ कुएँ के सतह से निकाल ली जाती थीं।

मृत्यु तथा दफनाने के दिन अज्ञात

58. यदि शाहजहाँ चकाचौंध कर देने वाले ताजमहल का वास्तव में निर्माता होता तो इतिहास में ताजमहल में मुमताज़ किस मूहर्त पर, किस दिन बादशाही ठाठ के साथ दफनाई गई, उस दिन का अवश्य निर्देश होता। किन्तु जयपुर राजा से हड़प किये हुए पुराने महल में हड़बड़ी से दफनाए जाने के कारण उस दिन का कोई महत्व नहीं है।

59. इतना ही नहीं अपितु इतिहास में मुमताज़ की मृत्यु के दिन तथा वर्ष के बाबत भी घोटाला-ही-घोटाला है। उसकी मृत्यु का वर्ष अलग-अलग ग्रन्थों में सन् 1629 या 1630 या 1632 लिखा है। जिस जनानखाने में पाँच सहस्त्र स्त्रियाँ हों उसमें भला प्रत्येक स्त्री के मृत्यु दिन का हिसाब रहे भी कैसे? उस जनानखाने में मुमताज़ का महत्व केवल 1/5000 होने से उसके लिए ताजमहल बनता तो औरों के लिए भी ताजमहलों की कतार बननी चाहिए थी।

शाहजहाँ-मुमताज प्रेम का निराधार उल्लेख

60. क्योंकि शाहजहाँ ने मुमताज़ के दफनस्थान के ऊपर ताजमहल बनवाया, अतः शाहजहाँ का मुमताज़ पर असीम प्रेम होना ही चाहिए ऐसा उलटा निष्कर्ष इतिहासज्ञों ने आज तक निकाला। वस्तुतः मुमताज पर शाहजहाँ का अनोखा प्रेम था यह सिद्ध करने वाली एक भी कथा नहीं है जैसे तुलसीदास की पत्नी-विरह से बेचैन होने की कथा है। लैला-मजनू, रोमियो व ज्यूलियट की प्रेम कहानियाँ बाजार में मिलती हैं। उसी प्रकार शाहजहाँ-मुमताज़ की प्रेम कहानियाँ भी मिलनी चाहिए थीं। वैसी एक भी पुस्तक कहीं भी मिलती नहीं है।

व्यय क्या हुआ?

61. ताजमहल पर चालीस लाख रुपये खर्च हुए, ऐसा शाहजहाँ के

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बादशाहनामे में उल्लेख है। किन्तु उसका ब्यौरा नहीं दिया है। दो मंजिलों में संगमरमर का फर्श तोड़कर मुमताज की दो कबें बनवाना, विशाल मचाण लगवाना, कुरान जड़वाना और सैकड़ों कक्ष, जीने, छज्जे आदि बन्द करवाना ऐसे कार्यें पर 40 लाख रुपया खर्च होना स्वाभाविक ही था। बादशाहनामे के उस न्यून के कारण ही अनेक मुसलमान लेखकों ने समय-समय पर ताजमहल पर खर्च की गई रकम के चालीस लाख रुपयों से चार करोड़ रुपयों तक के विविध कपोल-कल्पित अनुमान लिख रहे हैं। उनमें कुछ लेखकों ने तो चार करोड़ 45 लाख 18 हजार 726 रुपया, 7 आना, 6 पैसें इस प्रकार आने-पाई तक के आँकड़े भोले-भाले लोगों की आँखों में धूल झोंकने हेतु दे रखे हैं। ताजमहल जैसी विशाल इमारत के खर्चे के आँकड़े कभी नमक-मिर्ची की तरह आने-पाई में नहीं दिए जाते।

इतने बड़े भवन पर आज भी जो व्यय होता है उसमें दस बीस रुपए का हिसाब नहीं होता। इतनी बड़ी राशी का व्यय चार करोड़ या साढ़े चार करोड़ लिखा जाता है। यदि बहुत ही सटीक हिसाब भी हो तो आगे की संख्या हज़ारों में जोड़ दी जाती है। जैसे चार करोड़ चालीस लाख दस हजार। यहां तक कि चार करोड़ चालीस लाख एक हजार की राशी होने पर उस एक हज़ार का वर्णन नहीं किया जाता।

खर्चे का इतना बारीक ब्यौरा देने से पाठक उस हिसाव को वास्तविक तथा विश्वास योग्य समझेंगे ऐसा लेखक का अनुमान रहा होगा। किन्तु वह अनुमान गलत सिद्ध हुआ। एक विशाल इमारत पर खर्चे के काल्पनिक आँकड़े आने-पाई में देने से ही लेखक की धोखेबाजी प्रकट होती है।

अनुमान लगाया जाए कि 20,000 मज़दूर बाईस वर्ष तक कार्य करते रहे हों तो एक दिन की तनख्वाह प्रति व्यक्ति यदि चार आना भी रही हो तो कुल मज़दूरी चार करोड़ पचास लाख से अधिक बनती है। प्रयोग में आने वाला सामान इससे कई गुणा अधिक बनेगा। अत:खर्चे

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

की उपरोक्त सभी राशीयां गलता होती हैं।

इससे स्पष्ट निष्कर्ष यह निकलता है कि जयपुर नरेश से जब्त किये ताजमहल को कब्र का रूप देने में जो भी खर्चा हुआ वह भी कंजूस शाहजहाँ ने सारा स्वयं न करते हुए हिन्दु राजाओं को धमकाकर उनसे वसूल किया। इस प्रकार ताजमहल का निर्माण तो दूर ही रहा, ताजमहल से शाहजहाँ ने जो अपार सम्पति लूटी थी उसका नगण्य हिस्सा ही शाहजहाँ ने तेजोमहालय मंदिर को कब्र का रूप देने में लगाया। और चापलूसों ने अपना काम किया। झूठा हिसाब बनाकर सच्चा सिद्ध करने के लिए आने दोआने का हिसाब दर्शाया।

निर्माण की अवधि

62. ताजमहल बनवाने में कितने वर्ष लगे, इस सम्बन्ध में भी विभिन्न लेखकों ने भिन्न-भिन्न अनुमान दे रखे हैं। वस्तुत: शाहजहाँ ने ताजमहल का निर्माण किया ही नहीं। फिर भी ताजमहल के निर्माण में 10,12,13,18 या 22 वर्ष लगे ऐसे अनुमान प्रचलित हैं। इससे विभिन्न अनुमान इसलिए प्रकट हुए कि तेजोमहालय जब्त करने के पश्चात् विविध कक्ष, जीने, छज्जे, द्वार, खिड़कियाँ बन्द करवाना, कुरान जड़वाना आदि परिवर्तन कार्य की कोई जल्दी नहीं थी। वह आराम से कई वर्ष धीरे-धीरे चलता रहा। परिवर्तन कितना करना और कब तक करना इसका कोई निश्चित लक्ष्य भी नहीं था। अत: यह परिवर्तन रुक-रुककर 10,12,13,18 या 22 वर्ष भी चलते रहे। इसी कारण विविध लेखकों द्वारा किए वे उल्लेख एक प्रकार से सही भी हो सकते हैं या कपोलकल्पित। किन्तु वह अवधि ताजमहल के निर्माण की नहीं अपितु ताजमहल के छह मंजिल बन्द करने में और उसका रंगरूप बिगाड़ने में तथा उसकी सम्पत्ति लूटने में लगी ।

वास्तुकारों के मनगढ़न्त नाम

63. ताजमहल जैसा सुन्दर भवन किसने बनाया? इस सम्बन्ध में भी विविध इतिहासज्ञों ने अनेक वास्तुकारों के मनगढ़न्त नाम दे रखे हैं। यदि

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

शाहजहाँ वास्तव में ताजमहल बनवाता तो प्रमुख कारिगरों के नाम दरबारी दस्तावेज में मिलते, परन्तु शाहजहाँ के दरबारी कागजों में या तत्कालीन तवारीखों में ताजमहल का नाम तक नहीं है। ताजमहल के निर्माताओं के विभिन्न कल्पित नाम इस प्रकार हैं— ईसा एफंदी या अहमद मेहंदिस या आस्तिन् द० बोर्दो नाम का फ्रेंच व्यक्ति या जेरोनिमो व्हिरोनिओ नाम का इटालवी व्यक्ति। कुछ अन्य लोग कहते हैं कि किसी कारीगर की आवश्यकता ही क्या थी जब मुमताज पर असीम प्यार करने वाला शाहजहाँ स्वयं ही इतना कुशल कलाकार था कि मुमताज पर आँसू बहाते-बहाते शाहजहाँ के मन में ताजमहल की पूरी रूपरेखा प्रकट हो गई और उसी के अनुसार ताजमहल बनाया गया।

नक्शे कहाँ हैं?

64. ताजमहल जैसी विशाल तथा सुन्दर इमारत बनवानी हो तो उसके सैकड़ों नक्शे बनवाने पड़ते हैं। वे विविध कारीगरों को बाँटे जाते हैं और उन्हीं के अनुसार इमारत बनती है। ताजमहल के बाबत जो विविध अफवाहें हैं उनमें कभी तो यह कहा जाता है कि शाहजहाँ ने स्वयं ताजमहल की रूपरेखा बनाई, कोई कहता ही कि ईसाएफंदी ने जो नक्शा बनाया, वही शाहजहाँ को पसन्द आया और उसी के अनुसार ताजमहल बना। अन्य इतिहासकार कहते है कि ईरान, तुर्क -स्थान आदि कई देशों के कारीगरों से नक्शे मँगवाकर उनमें से एक चुना गया। वह सारी कल्पनाएँ निराधार हैं क्योंकि शाहजहां के ढेरों उपलब्ध दस्तावेजों में ताजमहल का एक भी नक्शा उपलब्ध नहीं है।

मजदूरी तथा सामग्री के दस्तावेज कहाँ हैं?

65. ताजमहल के निर्माण में 20 हजार मजदूर 22 वर्ष तक काम करते रहे और विविध प्रकार की सामग्री (ईट, पत्थर, चूना, हीरे, माणक, पन्ने इत्यादि) ढेरों में खरीदी गई सामग्री इत्यादि का, व्यौरा इतिहासकार, पत्रकार तथा अध्यापक आदि दोहराते रहते हैं। तो प्रश्न यह उठता

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

है कि 22 वर्ष तक 20 हजार मजदूरों को मज़दूरी दिए जाने के हिसाब, तथा सामग्री खरीदे जाने के हिसाब ये सारे कहाँ हैं? इस प्रकार का एक भी कागज शाहजहाँ के दरबारी दस्तावेजों में इसलिए उपलब्ध नहीं है क्योंकि शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाया ही नहीं। शाहजहाँ ने तो बना-बनाया ताजमहल केवल हथिया लिया। अत: इतिहासज्ञ तथा उपन्यासकार, पत्रकार, कवि, नाटककार, लेखक, ग्रन्थकार आदि शाहजहाँ द्वारा ताजमहल बनवाये जाने का जो ढ्योरा देते रहते हैं वह निराधार है।

बगीचे में पवित्र हिन्दू पुष्प वृक्ष

66. ऐसा विवरण मिलता है कि ताजमहल उर्फ तेजोमहालय के बगीचे में केतकी, जाई, जुई, चम्पा, मौलश्री, हरश्रृंगार और बेल आदि हिन्दू महत्व के वृक्ष थे। हालांकि इनके फल, फूल तथा पत्ते हिन्दु पूजा विधि में प्रयोग किये जाते हैं। इससे भी सिद्ध होता है कि तेजोमहालय मूलत: हिन्दू मंदिर-महल था। यदि ताजमहल कब्रस्थान के निमित बना होता तो उसमें हिन्दू धार्मिक महत्व के पौधे नहीं होते। क्योंकि कब्रस्तान में लगे या पनपे पौधों के फल, फूल आदि का सेवन पसन्द नहीं किया जाता। और यदि वे पौधे शाहजहाँ की आज्ञा से लगवाए गए थे तो बाद में भी लगाए जाते रहे होते। ये सभी पौधे शीघ्र वहाँ से समाप्त होते गए और कुछ ही समय बाद के उद्यान में उस प्रकार के पौधों का कोई चिन्ह नहीं रहा क्योंकि शाहजहाँ ने बाद में हिन्दू मन्दिरों से सम्बन्धित सभी चिन्ह जो सम्भव थे उखड़वाए।

यमुना तट

67. हिन्दु श्मशान के समीप मृत मुमताज़ की कब्र नदी के किनारे बनाने की आवश्यकता नहीं थी। नदियों के किनारे महल या हिन्दू मन्दिर बनाने की प्रथा अति प्राचीन है जहां पानी का बहुत प्रयोग होता है। उसी के अनुसार तेजोमहालय यमुना के किनारे बना है। नदियों से खाई की तरह इमारत की सुरक्षा भी बनी रहती है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

68. इस्लामी प्रथा में मृतक की कब्र उठाना और कब्र की पूजा आदि करना वर्जित है। मृतक को दफनाकर भूमि इस प्रकार समतल कर देना कि दफन का कोई चिन्ह ही न रहे। ऐसा मूलत: इस्लाम का आदेश है। विविध सुल्तान, बादशाह, बेगम, नाई, धोबी, भिस्ती, चिस्ती आदि की शानदार कब्रें और उन पर मचने वाला हल्ला-गुल्ला इस्लामी नियमों का उल्लंघन है। जिन विशाल भवनों में शेरशाह, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, मुमताज, दिलरसबानु बेगम आदि दफनाई गई हैं वे सारे हड़प किये गये विशाल हिन्दू महल हैं। ताजमहल में तहखाने तथा ऊपर के मुख्य मंजिले होने से ऊपर-नीचे एक ही व्यक्ति के नाम दो-दो कब्रें बनी हैं। जहाँ एक भी कब्र वर्जित है वहाँ प्रत्येक मृत की दो-दो कब्रें बनाना सर्वथा असम्भव हैं। शिव मंदिरों में दो स्तरों पर दो शिवलिंग होते हैं। उन दोनों को दबाने के लिए भी दो स्तरों पर एक ही मृतक की दो-दो कब्रें बनी हैं। उज्जैन के महाकालेश्वर तथा सोमनाथ के अहल्याबाई होलकर द्वारा बनाये गये मंदिर में दो स्तरों पर दो शिवलिंग बने हैं। तेजोमहालय उर्फ ताजमहल में भी उसी प्रकार दो स्तरों पर दो शिवलिंग थे। उन्हें छुपाने के लिए ताजमहल के दो मंजिलों में मुमताज़ के नाम की दो कब्रें बनी हैं। हो सकता है कि मुमताज़ का शव बुरहानपुर में ही हो और ताजमहल वाली कब्रों में अग्रेश्वर महादेव के दो शिवलिंग ही दबे पड़े हों।

69. ताजमहल के चारों ओर के मेहरावदार प्रवेशद्वार पूर्णत: समरूप हैं। इस प्रकार की रूपरेखा को वैदिक स्थापत्य में चतुर्मुखी कहा जाता है। जैसे ब्रह्माजी के चार मुख होते हैं।

गुम्बद का हिन्दू वैशिष्ट्य

70. ताजमहल के गुम्बद में आवाज प्रतिध्वनित करने का गुण है। कब्र में शान्ति और मौनता के स्थान पर इस प्रकार के गुम्बद का होना बेतुकापन है। इसके विपरीत हिन्दू मंदिरों के गुम्बदों में प्रतिध्वनित करने का गुण होना आवश्यक है क्योंकि हिन्दू-देवताओं की पूजा या

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

आरती करते समय शंखों, घंटालों एवं मृदंगों की प्रतिध्वनित एवं वर्धित ध्वनि से तांडव के अनुकूल नादब्रह्म निर्माण होता है।

71. ताजमहल के गुम्बद के शिखर पर कमल चिन्ह बना हुआ है जो हिन्दू लक्षण है। इस्लामी गुम्बद गंजा होता है। जैसे दिल्ली के चाणक्यपुरी में बने इस्लामी दूतावास के गुम्बद। उस गुम्बद के कटिभाग में जो मेखला बनाई गई है वह भी कमलपटलों की है। इस प्रकार गुम्बद का पदमासन भी हिन्दू लक्षण है, क्योंकि हस्तकमल, चरण कमल, नेत्रकमल आदि वैदिक परिभाषा ही हैं।

72. ताजमहल का प्रवेश द्वार दक्षिणाभिमुख है जब कि यदि वह मूलत: कब्र होती तो उसका द्वार पश्चिम की ओर होना चाहिए था। मुमताज़ यदि सचमुच ताजमहल में दफनाई गई होती तो उसकी आत्मा वहाँ पश्चिम द्वार न होने से वहीं तड़पती होती।

मुर्दे का टीला कब्र कहलाती है न कि भवन

73. मुर्दे के दफन स्थान पर जो पत्थर या ईंटों का छोटा टीला बना होता है उसे कब्र कहा जाता है न कि किसी भवन को। यह तत्त्व पाठक अवश्य ध्यान में रखें। विश्व भर में यह तथ्य लागू है। जैसे कि ईजिप्त (मिस्र देश) के एक 'पिरामिड' में सम्राट ट्यूटेन खॅमेन् के दफन स्थान पर कब्र के रूप में शव पाया गया। अत: आज तक के पाश्चात्य विद्वान समझते रहे कि ट्यूटेन खॅमेन् के दफन स्थल पर कब्र के रूप में वह विशाल 'पिरामिड' बनाया गया। वह बड़ी भारी भूल है। जब ट्यूटेन खॅमेन् का कोई महल नहीं है और ऐसा समझा जाता है मृत ट्यूटेन खॅमेन् के लिए कब्र के रूप में वह विशाल पिरामिड बनवाया गया उसका अपना जब कोई महल नहीं है तो मृत ट्यूटेन खॅमेन् के लिए कौन पिरामिड जैसी विशाल कब्र बनाएगा? विविध पिरामिड तो मरुस्थल किले हैं। मरुस्थल के तूफानों में रेत के ढेरों से छत ढक जाती हैं। अत: पिरामिड की दीवारें ढलान वाली बनाई गई हैं। उलटे धरे हुए यज्ञपात्र जैसा उनका आकार है। उसका मूल

PDF Compressed, OCR, Web Optimized using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

वैदिक है।

इसलामी प्रथा के अनुसार मुसलमान राष्ट्रपति डॉक्टर जाकिर हुसैन यदि दिल्ली के राष्ट्रपति भवन के केन्द्रीय कक्ष में दफनाए जाते तो उनकी पुण्यतिथि पर पटना, अलिगढ़, वाराणसी आदि स्थानों से उनके सगे-सम्बन्धी दिल्ली में आकर निजी रिश्तेदारों के यहाँ ठहरते। दूसरे दिन वे कब्र पर जाने के लिए निकलकर लोगों से कब्र का रास्ता पूछते। रास्ता पूछते समय उनकी भावना होती कि किसी मैदान में जाकिर हुसैन जी को दफनाकर उस स्थान पर एक छोटा टीला बना दिया होगा। रास्ता पूछते-पूछते दाएँ-बाएँ मुड़ते हुए वे किसी प्रकार राष्ट्रपति भवन के आसपास पहुँचते तो जब वे अन्तिम व्यक्ति से पूछते कि 'जाकिर हुसैन जी की कब्र कहाँ है' तो उन्हें अगुलि-निर्देश से ऊँचे गुम्बद की दिशा में इशारा करके कहा जाता कि 'वह देखो वह जो ऊँचा गुम्बद दिख रहा है वही कब्र है'। उस उद्‌गार से प्रेक्षकों को मतिभ्रम होता है। निकलते समय उनकी कल्पना होती कि किसी मैदान में मृतक के दफनस्थल के ऊपर एक छोटा टीला होगा। किन्तु प्रत्यक्ष में उन्हें गुम्बद वाला विशाल विस्तृत भवन ही कब्र बताया जाता है। अत: पाठक इस बात का ध्यान रखें कि विश्व में बड़े व्यक्तियों को बड़े भवनों में दफनाया गया है। तथापि वे भवन कब्रें नहीं हैं। उसके अन्दर का टीला कब्र होता है। इस दृष्टि से ताजमहल के अन्दर मुमताज का टीला भले ही कब्र बनाई गयी हो किन्तु उसके ऊपरका विशाल भवन तेजोमहालय नाम का प्राचीन मंदिर है। इमारत कभी कब्र नहीं होती।

74. संगमरमरी ताजमहल की चार मंजिलें हैं। उसके तले नदी स्तर के नीचे का तहखाना मिलाकर तीन और मंजिलें लाल पत्थर की बनी हैं। इस प्रकार वह सात मंजिला भवन है, रामायण काल से राजा रईसों के भवन सात मंजिले बनाने की प्रथा है। पुणे में पेशवाओं का शनिवार बाड़ा सात मंजिला था। अंग्रेजों ने उसे खाक कर डाला। इन्दौर में

होलकरों का जूना राजवाड़ा सात मंजिला है। ताजमहल परिसर में तो और भी इमारतें सात मंजिली हैं। संगमरमरी ताजमहल के प्रति मुँह किये दाएँ-बाएँ तो जोड़ी के रूप में दो भवन हैं उनकी भी सात मंजिल हैं। जिस लाल पत्थर के भव्य प्रवेश द्वार पर टिकट प्राप्त होते हैं वह भी सात मंजिला है। यह सर्वथा हिन्दू प्रथा है।

75. संगमरमरी चबूतरे के नीचे जो लाल पत्थर की मंजिल है उसमें यमुना प्रवाह की सीध में 22 कक्षों की कतार है। उनकी खिड़कियाँ, झरोखे आदि शाहजहाँ ने ईंटों से तथा चूने से आबड़खाबड़ बन्द करा दिए हैं। अत: अन्दर घना अँधेरा है। उनमें उतरने के दो जीने हैं। संगमरमरी चबूतरे के पीछे दाएँ-बाएँ कोनों में वे जीने देखे जा सकते है। प्रेक्षक उनकी 17 पौड़ी उतर भी सकते हैं। किन्तु कक्षों में प्रवेश करने के द्वारों को पुरातत्व खाते के ताले लगे होते हैं। वे खुलवाने पर प्रेक्षक अन्दर दाखिल हो सकते हैं। उन कक्षों के दीवारों तथा छतों पर अभी कहीं-कहीं हिन्दू रंग लगा हुआ है। उन 22 कक्षों के पश्चात् अन्दर की तरफ लगभग 325 फीट लम्बा और 8½ फीट चौड़ा एक आला या बरामदा-सा बना हुआ है। वहाँ भी घना अँधेरा है।

मूर्तियों वाला कक्ष

76. इस आले से और आगे अन्दर जाने के लिए दाएँ-दाएँ कोनों के पास दो द्वार बने हुए हैं किन्तु वे ईंटों से ऊबड़-खाबड़ चुनवा दिए गये हैं। सन् 1932-34 में कई व्यक्तियों ने उसमें पड़े सुराखों से अन्दर झाँका तो अनेक स्तम्भों वाला एक विशाल कक्ष दिखा। उन स्तम्भों पर मूर्तियाँ खुदी हैं। उस समय वह देखकर उन्हें बड़ी उलझन-सी हुई कि शाहजहाँ ने यदि ताजमहल बनाया तो नीचे मूर्तियाँ क्यों हैं? उस उलझन का उत्तर अब उन्हें मिला कि तेजोमहालय मूलत: मंदिर ही होने से उसमें अनेकानेक मूर्तियाँ थीं। शाहजहाँ ने उस पर कब्जा कर उसमें कब्रें ठूँस दीं और द्वार के कमानों पर कुरान की आयतें जड़

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

दीं।

ताजमहल के सातों मंजिलों के सैकड़ों कक्ष यदि खुलवा दिए गये तो हो सकता है उनमें से कई देवमूर्तिया तथा संस्कृत शिलालेख प्राप्त हों। सात मंजिले कुएँ से खारा जल निकालकर देखना आवश्यक है क्योंकि उसके तल में भी ऐसे कुछ प्रमाण अभी भी छुपे पड़े हो सकते हैं।

ताजमहल में देवमूर्तियाँ पाई गई हैं

77. सन् 1952 के आसपास जब एस० आर० राव ताजमहल पर पुरातत्व अधिकारी नियुक्त थे, ताजमहल की एक दीवार में एक लम्बी-चौड़ी दरार दिखाई दी। कारीगरों को बुलाकर मरम्मत आरम्भ हुई। आसपास की और ईंटें निकालने की आवश्यकता पड़ी। वे ईंटें निकलते ही अष्टवसु की मूर्तियाँ बाहर दिखाई पड़ने लगीं। तुरन्त मरम्मत रुकवाकर दिल्ली के पुरातत्व प्रमुख से मार्गदर्शन माँगा गया। उस अधिकारी ने शिक्षामन्त्री अबुल कलाम आजाद से पूछा। उन्होंने प्रधानमन्त्री नेहरू से पूछा। तब निर्णय यह हुआ कि मूतियाँ जहाँ से निकली हैं वहीं बन्द करवा दी जाएँ। दीवर में दरार पड़ने का कारण भी यही था कि शाहजहाँ के समय में उस दीवार की ईंटें निकालकर उसमें मूर्तियाँ ठूँस दी गई थीं।

उस घटना के कुछ वर्ष पश्चात् टी० एन० पदमनाभन जब ताजमहल पर पुरातत्व अधिकारी थे तो उन्हें ताजमहल में विष्णु की मूर्ति प्राप्त हुई थी। किन्तु कनिंगहम के समय से पुरातत्व विभाग समय-समय पर प्राप्त होने वाले ऐसे प्रमाणों को प्राप्ति स्थानों से दूर कहीं ले जाकर छुपाता रहा है।

शाहजहाँ ने जब तेजोमहालय मंदिर हथिया लिया तब उसने सारी मूर्तियाँ निकलवाकर दीवारों में या भूमि में दबवा दीं।

शाहजहाँ से पूर्व ताजमहल के उल्लेख

78. ताजमहल के मूल निर्माण के सम्बन्ध में सार्वजनिक रूप से पूरी जाँच

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

प्रकट होना आवश्यक है। तथापि अब तक जो प्रमाण प्राप्त हैं उनसे ऐसा लगता है कि सन् 1155 ईसवी के आश्विन शुक्ल पंचमी रविवार के दिन यह तेजोमहालय शिवमंदिर राजा परमर्दिदेव के शासनकाल में बनकर तैयार हुआ। मुहम्मद गोरी व कई मुसलमान आक्रमणकारीयों ने ताजमहल के द्वार आदि तोड़कर उसे लूटा। तथापि प्रत्येक हमले के पश्चात् सोमनाथ की तरह हिन्दू लोग नये द्वार आदि लगवाकर, शुद्धी कर मूर्तियों की पुनर्स्थापना कर तेजोमहालय को ठीक-ठाक करते रहे। उस कड़ी में शाहजहाँ अन्तिम इस्लामी आक्रमणकारी था जिसने तेजोमहालय शिव मंदिर को कब्जा कर इस्लामी कब्रस्थान ही बना छोड़ा।

79. स्वयं बाबर के लिखे बाबरनामे में लिखा है कि इब्राहीम लोदी से जीते हुए आगरा स्थित महल में बाबर ने ईद मनाई। "उस महल का एक केन्द्रीय अष्टकोना कक्ष है और चारों कोनों पर मीनारें हैं।"

80. Akbar the Great Moghul नाम के ग्रन्थ में लेखक Vincent Smith ने उल्लेख किया है कि "बाबर का साहसी जीवन सन् 1530 में आगरा नगर स्थित एक उद्यान महल में समाप्त हुआ।" वह उद्यान महल ताजमहल ही है।

81. बाबर की कन्या गुलबदन बेगम ने 'हुमायूँनामा' शीर्षक का इतिहास लिखा है। क्योंकि ताजमहल में ॐ, शंख, नाग, त्रिशूल, देवमूर्तियाँ आदि अनेक आध्यात्मिक चिन्हों की भरमार थी अत: उसने ताजमहल का उल्लेख गूढ़ रहस्यपूर्ण 'महल' के नाम से किया है।

यह सारे ऐतिहासिक इस्लामी उल्लेख शाहजहाँ से 100 वर्ष पूर्व के हैं। किसी भी तत्कालीन इस्लामी त्वारीख में उस इमारत को तेजोमहालय उर्फ ताजमहल इसलिए नहीं कहा है कि इस्लामी आक्रामणकारी हिन्दू मन्दिरों व उनके नामों का तीव्र तिरस्कार करते थे।

82. ताजमहल परिसर 38-40 एकड़ भूमि पर फैला हुआ है। उसकी दीवारें उत्तर में नदी के पार और पश्चिम में विक्टोरिया बाग में भी बनी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हुई देखी जा सकती हैं। उन दीवारों के अन्त में अष्टकोने छत्र बने हुए हैं। मृतक की कब्र के लिए सैकड़ों कक्षों वाला इतना विशाल परिसर बनाना हास्यस्पद है।

83. यदि ताजमहल मुमताज़ की कब्र के लिए बनाया जाता तो उस परिसर में सरहंदी बेगम, फतेपुरी बेगम, सातुन्निसा खानम और एक फकीर आदि की कब्रें नहीं होतीं और न ही होनी चाहिए थीं। सरहंदी बेगम तथा फतेहपुरी बेगम दोनों मुमताज़ के समान रानियाँ होते हुए भी दरबानों की तरह वे बाहर हाथी चौक में दफनाई गई हैं जबकि मुमताज़ बड़ी शान से केन्द्रीय गुम्बद के नीचे दफनाई हुई है। यह इसी कारण हुआ कि एक हिन्दू मंदिर को किसी प्रकार लूटकर भ्रष्ट कर उसे इस्लामी कब्रस्थान बनाना मूल उद्देश्य था। अत: जिस समय जो शाही महिला मरी उसे ताजमहल परिसर में जो भी रिक्त कोना दिखा उसमें दफना दिया गया।

84. मुमताज़ से विवाह होने से पूर्व शाहजहाँ के कई अन्य विवाह हुए थे। उसी प्रकार मुमताज़ से विवाहबद्ध होने के पश्चात् भी शाहजहाँ के और कई विवाह हुए थे। अत: मुमताज़ की मृत्यु पर उसकी कब्र के रूप में एक अनोखा खर्चीला ताजमहल बनवाए जाने का कोई कारण ही नहीं था।

85. मुमताज़ किसी सुलतान या बादशाह की कन्या न होने के कारण उसे किसी विशेष प्रकार के भव्य महल में दफनाने का कोई प्रश्न ही नहीं था।

86. आगरे से 600 मील दूर बुरहानपुर में मुमताज़ की मृत्यु हुई थी। वहाँ उसे दफनाया भी गया। पुरातत्व विभाग के अनुसार बुरहानपुरा में मुमताज़ की कब्र ज्यों-की-त्यों बनी हुई है अत: उसके नाम से आगरा में जो दो कब्रें बनी हैं वे दोनों नकली होनी चाहिए और उनके अन्दर शिवलिंग ही दफनाए गये होंगे।

87. बुरहानपुर से मुमताज़ का शव आगरा लाने का ढोंग इस कारण किया

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

गया था कि मुमताज़ के प्रति प्रेम का ढोंग कर उसकी यादगार के नाम पर उसको दफनाने के बहाने राजा जयसिंह पर दबाव डालकर तेजोमहालय पर कब्जा कर उसमें धरी हुई सारी सम्पत्ति लूट लेना।

88. जिस शाहजहाँ ने जीवित मुमताज के निवास या विहार के लिए एक भी महल नहीं बनवाया वह मृत मुमताज़ के शव के लिए महल क्यों बनवाएगा? यह भी एक सोचने की बात है।

89. शाहजहाँ के बादशाह बनने के पश्चात् ढाई-तीन वर्षों में ही मुमताज़ की मृत्यु हुई। इतनी कम अवधि में मुमताज़ की कब्र पर अनापशनाप खर्चा करने के लिए खजाने में धन था ही कहाँ?

90. मुमताज़ के शव पर अप्रतिम महल बनवाने योग्य शाहजहाँ-मुमताज के असीम प्रेम का उल्लेख इतिहास में जरा भी नहीं है। उलटा शाहजहाँ के व्यभिचार तथा अनैतिक सम्बन्धों की घटनाएँ कई हैं। निजी कन्या जहाँनारा, तथा जनानखाने में तैनात दासियाँ और शाइस्ताखान की एक बेगम आदि से शाहजहाँ के अवैध सम्बन्ध होते थे। ऐसा स्त्रीलम्पट तथा अनाचारी व्यक्ति मुमताज़ की मृत्यु पर उसकी कब्र के लिए अपार धन खर्च कर ही नहीं सकता।

91. मुमताज़ पर असीम प्रेम होने के कारण ताजमहल जैसी सुन्दर कब्र का निर्माण हुआ यह निष्कर्ष मानवशास्त्र की दृष्टि से निराधार है। किसी स्त्री के लिए लैंगिक, कामुक या वैषयिक प्रेम किसी पुरुष में कर्तृत्व नहीं जगाता। वैषयिक प्रेम से तो पुरुष निर्बल, इतवल, उदास तथा कृति शून्य बनता है। यदि कोई युवक स्त्रियों के प्रेम में फँस जाए तो उसके माता-पिता को चिन्ता होने लगती है। वे सोचते हैं कि हमारा पुत्र तो काम से गया। इससे किसी प्रकार की आशा रखना व्यर्थ है। उसका जीवन विफल हो जाएगा। स्त्री-प्रेम में फँसा व्यक्ति साहसी भी हो तो वह या तो किसी का वध करेगा या आत्महत्या कर लेगा। उससे गौरवपूर्ण लौकिक कार्य कुछ नहीं होगा। किसी युवक को किसी युवती के प्रति अपार प्रेम देखकर कोई पिता यह नहीं कहेगा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कि 'शाबाश बेटा, तुम जितने अधिक स्त्रीलम्पट बनोगे उतने ही अधिक ताजमहल बनाकर विश्व में नाम पाओगे।' अत: मुमताज़ पर असीम प्रेम होने के कारण शाहजहाँ द्वारा ताजमहल का निर्माण करना असम्भव बात है। ईश्वर, माता या मातृभूमि में जिसकी अपार निष्ठा या लग्न हो उसके हाथों बड़े-बड़े कार्य होते हैं।

92. सन् 1973 के आरम्भ में ताजमहल के उद्यान में लगाए अंग्रेजों के फव्वारे बन्द पड़ गये। उनमें कुछ खराबी आ गई थी। वह दुरुस्त करने हेतु जब खुदाई की गई तो अन्दर अन्य प्राचीन फव्वारे निकले, उनका भी रुख संगमरमरी ताजमहल की दिशा में ही था।

93. मुगल इतिहास मे एक भी तो ऐसा बादशाह या सुल्तान नहीं मिलता जो प्रेमी सिद्ध किया जा सके। बहुपत्नि प्रथा के घोर पक्षपाती से प्रेमी हृदय की आशा भी नहीं रखनी चाहिए। मुमताज के पूर्व सैकड़ों महिलाएं शाहजहाँ के हरम में थी। मुमताज के काल में सैकड़ों और आई। यह संख्या मुमताज के बाद हज़ारों में पहुंची। ऐसे प्रेमी को प्रेम स्मारक के बारे में सोचने का कितना समय मिला होगा? बनवाने की बात तो बहुत दूर की है।

शाहजहाँ ने ताजमहल में बड़ी लूटपाट और तोड़फोड़ मचाई, बगीचे में लगे हिन्दू पूजा वृक्ष तोड़े, छह मंजिलों के सैकड़ों कक्ष बन्द करवाने के लिए बगीचे में ईंट-पत्थर आदि के ढेर लगवाए। उससे प्राचीन तेजोमहालय के हिन्दू फव्वारे टूट-फूटकर बन्द हो गये थे। इस कारण अंग्रेजों को नये फव्वारे लगवाने पड़े। तेजोमहालय के बीचोंबीच लगे फव्वारों की परम्परा प्राचीन हिन्दू है। सारी ऐतिहासिक इमारतों में इस प्रकार की जल प्रवाह की जो नालियाँ, प्रपात, हौद आदि बने हुए हैं वे वैदिक परम्परा के अनुसार है। अर्बस्थान, ईरान आदि वीरान प्रदेशों से भारत में घुसे बर्बर इस्लामी हमलावरों को न तों इतना बहता पानी अच्छा लगता था और न ही उन्हें सिंचाई योजना का कोई ज्ञान या अनुभव था।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

94. ताजमहल के संगमरमरी चबूतरे पर खड़े-खड़े ऊपर भी एक मंजिल दीखती है। तथापि उसमें सामान्य प्रेक्षकों को प्रवेश नहीं मिलता। उस मंजिल पर पहुँचने के लिए दाएँ-बाएँ दो जीने हैं। उन्हें पुरातत्व विभाग के ताले लगे रहते हैं। ऊपर के उन कक्षों में फर्श पर और दीवारों पर जो संगमरमर लगा था वह शाहजहाँ द्वारा उखाड़ लिया गया। वह कुरानों की आयतें जड़ने के और मुमताज़ के नाम की दो कब्रें बनाने के काम में लाए गये। क्योंकि पाँच सौ वर्ष पूर्व हिन्दुओं ने कहाँ से संगमरमर मँगवाकर ताजमहल बनवाया यह शाहजहाँ के कर्म चारी नहीं जानते थे। संगमरमर वाली निचली मंजिल के अतिरिक्त अन्य मंजिलें तो शाहजहाँ को बन्द करवानी ही थीं ताकि ऐरे-गैरे व्यक्ति उनका कब्जा न ले सकें। उन कमरों के छत धुएँ से काले हुए पड़े हैं। चाँदी के द्वार, सोने के खम्भे आदि उखाड़ने के लिए जब शाहजहाँ के सैनिकों ने ऊपर मुकाम किया तब उन्होंने वहाँ रोटी पकाकर धुएँ से छत काला किया। इस प्रकार शाहजहाँ ने ताजमहल का निर्माण करने के बजाए तेजोमहालय को लूटकर उसे खराब किया। इस प्रकार इतिहास में जिन इस्लामी आक्रमणकारीयों ने हिन्दुस्तान की ऐतिहासिक इमारतों को तोड़ा-फोड़ा और लूटा उनको उन इमारतों का निर्माता बतलाया जा रहा है। Destroyers have been called builders। अब भारत स्वतन्त्र हो जाने के कारण ऊपर जाने के जीने प्रेक्षकों के लिए खोल देने चाहिए। ऊपरले कक्ष छुपाने की अब कोई आवश्यकता नहीं।

95. शाहजहाँ के समय बर्निए नाम का एक फ्रेंच डाक्टर आगरा नगर में आया था। उसने अपने संस्मरणों में लिखा है कि संगमरमरी तहखाने में और उसकी निचली मंजिलों में मुसलमानों के अतिरिक्त किसी दूसरे को जाने नहीं देते। कारण यह था कि अन्य मंजिलों से निकली मूर्तियाँ शाहजहाँ ने निचली मंजिलों में ठूँसकर उन मंजिलों पर मुसलमानों का पहरा लगा दिया था।

PDF compressed, OCR, web optimized using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

96. ताजमहल के पश्चिमी प्रवेश द्वार के बाहर मिट्टी के ऊँचे-ऊँचे टीले बनाकर उन पर वृक्ष लगा दिए गये हैं। प्राचीनकाल में जब तेजोमहालय परिसर के सैकड़ों कक्ष बने तब नींव की खुदाई से निकले मिट्टी के टीले वहाँ इस कारण बनाए गये कि किसी आक्रमणकारी की चतुरंग सेना एकाएक पूरी शक्ति से हमला न कर सके। एक-एक, दो-दो सैनिकों की कतारों में ही शत्रु सेना चाहे तो आगे बढ़ सके। ऐसे विभाजित शत्रुसेना का प्रतिकार कुछ अधिक सरल हो सकता था। उन टीलों से अनेक, शाहजहाँ ने हजारों मजदूर लगवाकर उठवा दिए ताकि पूरे सवारी के साथ ताजमहल पर पहुँचना सुगम हो और ताजमहल परिसर दूर से दिखाई दे। अंग्रेज यात्री पीटर मंडी ने यह ब्यौरा लिख रखा है। यह भी दर्शाता है कि ताजमहल के नीचे तहखाने हैं और ताजमहल परिसर शाहजहाँ के पूर्व ही बना था।

97. टॅव्हरनिए नाम का फ्रेंच सर्राफ जो शाहजहाँ के समय आगरा आया था, ने लिखा है कि "मचाण लगवाने के लिए लकड़ी उपलब्ध नहीं थी इस कारण शाहजहाँ को इँटों का ही मचाण बनवाना पड़ा। अत: कब पर जो खर्चा हुआ उसनें मचाण का ही खर्चा सबसे अधिक था।" जब शाहजहाँ को मचाण के लिए पर्याप्त लकड़ी भी उपलब्ध नहीं थी वह ताजमहल जैसी विशाल और सुन्दर इमारत कैसे बना पाता? टॅव्हरनिए के उस कथन का अर्थ यह है कि बने-बनाए ताजमहल पर जब शाहजहाँ ने दीवारों पर ऊपर-नीचे कुरान की आयतें जड़ाना चाहा तो उसके लिए नीचे से ऊपर तक ईटों की चौडी दीवारों का ही मचाण खड़ा करना पड़ा। कुरान जड़ाने का खर्चा कम और मचाण का खर्चा बहुत अधिक ऐसा उलटा हिसाब बना। इसी से स्पष्ट है कि शाहजहाँ द्वारा छह मंजिलों के सैकड़ों कक्ष बन्द करवाने का और दीवारों पर कुरान की आयतें जड़ाने का ही कार्य किया गया।

98. ताजमहल परिसर के दरवाजों को मोटी नोकदार कीलें लगी हुई हैं। हाथी द्वारा वे दरवाजे तोडे न जा सकें अत: उन्हें कीलें लगाई

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जाती थीं। यदि ताजमहल कब्र होती तो उसे कील वाले द्वारों की कोई आवश्यकता नहीं थी। महल तथा मंदिरों में जहाँ अपार सम्पत्ति सुरक्षित रखनी होती थी वहीं ऐसे कीलदार द्वार लगाए जाते हैं।

99. ताजमहल के पूर्व में खाई बनी है। ताजमहल के पीछे भी यमुना प्रवाह जल से भरे खाई का काम देता है। इस प्रकार की सुरक्षा व्यवस्था दर्शाती है कि ताजमहल मूलतः एक मामूली मकबरा नहीं अपितु एक प्रसिद्ध तेजोमहालय शिवतीर्थ था।

100. ब्रिटिश ज्ञानकोष (Encyclopaedia Britannica) के अनुसार ताजमहल परिसर में अतिथि गृह, पहरेदारों के कक्ष, अश्वशाला इत्यादि भी हैं। मृतक के लिए इन सबकी क्या आवश्यकता?

101. कोई भी मकान बनाने वाला व्यक्ति अत्यन्त बारीकी से द्वार, खिड़की, जीने, छज्जे, कक्ष आदि जितने आवश्यक हों उतना ही बनवाता है। ऐसी अवस्था में मृतक के लिए ताजमहल बनवाया ही नहीं जा सकता। क्योंकि वह परिसर 38-40 एकड़ विस्तार का है। उसमें उद्यान, तालाब, जल वितरण योजना, फब्बारे, कुआँ, कई सात मंजिला इमारतें, सैकडों कक्ष, गौशाला, नक्कारखाना आदि कई प्रकार की इमारतें है। इनकी किसी मृतक को कोई आवश्यकता नहीं होती। ऐसी अवस्था में कौन ऐसे निरर्थक आडम्बर पर करोड़ों रुपये खर्च करेगा? मृतक के ऊपर लुटाने के लिए इतनी फालतू सम्पत्ति किसके पास होती है। मानवी स्वभाव से यह बात पूर्णतया विपरीत है। इसी कारण विश्व के अनेकानेक देशों में जहाँ भी विशाल इमारतों में मृतक प्रत्यक्ष दफनाए गये हों या उनके नाम की झूठी कब्रें बनाई गई हों उनके बारे में लोगों को यह जान लेना चाहिए कि वे इमारतें मंदिर, महल, कार्यालय, विद्यालय आदि किसी अन्य उद्देश्य से बनाई गई थीं। सदियों पश्चात् जब वे इमारतें मुसलमानों के कब्जे में आई तब उन्होंने उन इमारतों में किसी मुर्दे का या तो प्रत्यक्ष दफन किया या एक नकली कब्र बना दी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

102. तेजोमहालय शिवतीर्थ होने के कारण उसके पीछे पश्चिम दिशा में यमुना किनारे एक श्मशान बना है। श्मशान के डोम को जयपुर दरबार से वेतन मिला करता था। यदि शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाया होता तो उसके लिए स्थान कहीं और देखा होता। या श्मशान वहां से पहले हटवाया होता। चूंकि ताजमहल अपहृत करने का विरोध केवल जयपुर घराना ही करता शाहजहाँ उन्हे दबा सकता था। श्मशान हटाने का विरोध निश्चय ही सभी हिन्दू दरबारी जिनमें मेवाड़, जोधपुर और जैसलमेर जैसे ताकतवर राजा शामिल थे, करते अत: शाहजहाँ चुप कर गया होगा।

103. ताजमहल के नदी तट वाली लाल दीवार में नौकाएँ बाँधने के लिए लोहे की कड़िया लगी हुई हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि इस पार तक नौकाएँ चलती थीं। उसी कारण दोनों किनारों पर कुछ घाट अभी बचे हुए हैं। उनसे ऐसा लगता है कि शाहजहाँ ने तेजोमहालय के पिछवाड़े में दोनों किनारे पर जो लम्बे-चौड़े घाट थे, वे उखड़वाए ताकि हिन्दू जनता वहाँ स्नान, बाजार आदि के लिए आना बन्द कर दे।

104. शाहजहाँ काले संगमरमर का और एक ताजमहल यमुना के उस पार बनाकर दोनों को एक पुलिया से जोड़ने वाला था ऐसी एक अफवाह शाहजहाँ के चापलूस सेवक उस समय यूरोप से आए कुछ यात्रियों के कान में फूँक देते थे जिससे वे ताजमहल को शाहजहाँ निर्मित मानने लग जाएं। यदि ऐसी कोई इच्छा होती तो वह कामगरों के हाथ कटवाने की हिम्मत न करता। ताजमहल के कामगरों के यदि हाथ कटवाए ही थे तो उसके बाद के तथाकथित बनवाए भवन बनाने वाले कहां से ढूंढे। अत: हम कह सकते हैं कि शाहजहाँ के सफेद संगमरमर का ताजमहल बनवाना महज झूठ है। या काम करने वालों के हाथ कटवाने की बात झूठ है। यदि एक झूठ है तो दोनों क्यों नहीं? झूठे प्रचार से व्यक्ति स्वयं को ही झूठा सिद्ध करता है। जहां

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तक सवाल काले संगमरमर का ताजमहल बनवाने का है, एक मृत स्त्री के शव के पीछे दो-दो ताजमहल बनाना क्या हँसी-मजाक की बात थी? शाहजहाँ को मृतक के नाम ताजमहल बनाते रहने के अतिरिक्त और कोई काम-धन्धा था कि नहीं? एक मृतक स्त्री की स्मृति में यदि शाहजहाँ शाही खजाने से इतना पैसा बहाता रहता तो उसके जनानखाने की शेष 4999 स्त्रियाँ रो-पीटकर शाहजहाँ का जीना कठिन कर देतीं। शाहजहाँ तो इतना कंजूस था कि तेजोमहालय से अपार सम्पत्ति लूटने के पश्चात् भी उस इमारत के छह मंजिल आबड़-खाबड़ बन्द करवाने के लिए शाहजहाँ ने हंटर मार-मारकर मजदूरों से नि:शुल्क काम करवाया, और आश्रित राजाओं से पैसे वसूल किये और जयपुर नरेश जयसिंह से पत्थर तथा संगतराश मुफ्त माँगना चाहा। अत: जयसिंह ने शाहजहाँ के उन पत्रों का कोई उत्तर ही नहीं दिया।

105. ताजमहल की दीवारों का संगमरमर हल्के केतकी छटा का है जब कि कुरान की आयतों वाला संगमरमर सफेद दूध जैसे वर्ण का है। यह असंगति इस कारण हुई कि ऊपरले मंजिले के कक्षों की भूमि पर लगी संगमरमरी शिलाएँ निकलवाकर उन्हें कुरान जड़ाने के काम में लाया गया। इतिहासज्ञों ने ऐसे भी बारीकी से ऐतिहासिक इमारतों का निरीक्षण भी नहीं किया और इस्लामी तवारीखों का भी अध्ययन नहीं किया। वे केवल इस्लामी बाजारी अफवाहें ही दोहराते रहे। इससे सारे लोगों को एक सबक यह सीखना चाहिए कि जो बात तर्क से सिद्ध नहीं होती उसके पक्ष में कभी ऐतिहासिक प्रमाण मिल ही नहीं सकते।

हमने तर्क प्रस्तुत किया था कि क्या जीवित मुमताज़ के लिए शाहजहाँ ने कोई महल बनाया था? नहीं। तो फिर वह मृत मुमताज़ के शव के लिए भी विश्वविख्यात महल का निर्माण कर ही नहीं सकता। हमारा दूसरा तर्क था कि दिल्ली में सफदरजंग, हुमायूँ, लोदी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सुलतान, तुगलक सुलतान, निजामुद्दीन, आदि के बड़े-बड़े विशाल परिकोटे वाले महल रूपी मकबरे बताए जाते हैं। तो वे सुलतान-बादशाह-वजीर-फकीर आदि जब जीवित थे तो किन महलों में रहा करते थे? यदि जीवन-भर उनका कोई महल नहीं था तो उनके शव के लिए महल कौन बनाएगा? इस समस्या का सही उत्तर यह है कि पांडवों से लेकर पृथ्वीराज तक चार हजार वर्षों की लम्बी अवधि में जो महल बने थे उन्हें इस्लामी आक्रमकों ने तोड़ते-फोड़ते जो चंद महल, किले, बाड़े आदि बच गये उनमें कुतुबुद्दीन से लेकर बहादुरशाह जफर तक के मुसलमान रहा करते थे। उनको इस्लामी सम्पत्ति सिद्ध करने के लिए उन महलों के अन्दर झूठी, नकली कब्रें (मुर्दों के दफनाए जाने के टीले) बना दी गईं और बाहर कुरान की आयतें लिखवा दी गईं। अत: इस्लामी तवारीखों में एक भी किला, बाड़ा, महल, मकबरा, मस्जिद, मजार आदि बनाने का सबूत नहीं मिलता। वे सारे हड़प किये हुए महल हैं। हुमायूँ, एत्मादउद्दौला, सादतअली, सफदरजंग आदि हिन्दू राजाओं से जीते हुए उन महलों में रहते थे। उनकी कब्रें झूठी, नकली, धूल झोंकने वाली होने के कारण ही उन कब्रों पर मृतक का नाम अंकित नहीं होता। इतिहास की यह असीम हेराफेरी तर्क द्वारा ही जानी जा सकती है। तर्क के विरोध में जो प्रमाण प्रस्तुत किए जाते हैं वे नकली, ढोंगी, झूठे सिद्ध होने अनिवार्य है। यह हमने ताजमहल निर्माण की चर्चा के रूप में इस पुस्तिका में प्रस्तुत कर सिद्ध किया है। ऐसी अवस्था का द्योतक मुहावरा है—अक्ल बड़ी या भैंस।

106. ताजमहल के कारीगरों का नाम शाहजहाँ के दरबारी दस्तावेज या तवारीखों में न मिलने पर अनेक लेखकों ने भिन्न-भिन्न कपोलकल्पित नाम लिखने चालू कर दिए। उनमें एक नाम था स्वंय शाहजहाँ का। शाहजहाँ बड़ा प्रवीण कलाकार था, ऐसी मनगढ़न्त बात इतिहास में धूर्त लोगों ने घुसा दी। किसी ने यह भी नहीं सोचा कि दारू, अफीम

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

आदि मादक पदार्थ तथा पाँच हजार स्त्रियों के जनानखाने में जीवन बिताने वाला शाहजहाँ वास्तुकला कब और किससे सीखा? और सारे विश्व के कारीगरों पर मात करने वाली प्रवीणता उसने कैसे कमाई? उसके बनाए हुए अन्य महल कौन-कौन से हैं? अध्यापक तथा अन्य इतिहासज्ञों की तर्क द्वारा ऐतिहासिक बातों की बार-बार जाँच-पड़ताल करने की यह रीति अपनानी चाहिए। आज तक वह सावधानीयां न बरतने के कारण विश्व का बहुत सा इतिहास नकली और झूठा लिखा गया है। इस्लाम द्वारा निर्मित एक भी विशाल ऐतिहासिक भवन विश्व में न होने पर भी इस्लामी वास्तुकला के ढोल इतिहास में पीटने वाले हजारों ग्रन्थ लिखे गये हैं।

107. ताजमहल के पश्चिम में परकोटे के बाहर सटे हुए नौमहला नाम के विशाल खंडहर अभी भी देखे जा सकते हैं। शाहजहाँ ने जब जयपुर नरेश के तेजोमहालय परिसर पर हमला बोला तब उस संघर्ष में नौमहला तोड़-फोड़ दिया गया।

108 ताजमहल के परकोटे में पूर्वी द्वार के निकट एक आला बना हुआ है। वह गौशाला है। तेजोमहालय मंदिर के लिए रखी इन गौओं को जंगल चरने जाना तथा वापस निजी निवास पर आने की व्यवस्था परकोटे के बाहर ही की गई थी। यदि ताजमहल कब्र होता तो उसमें गौओं का क्या काम?

109. ताजमहल के पश्चिम में परकोटे के बाहर केसरी रंग के पत्थरों के कई भवन एक कतार में बने हुए हैं। तेजोमहालय शिवतीर्थ के भंडार, भंडारी, कीर्तनकार, कथाकार, पौराणिक, प्रवचनकार आदि के निवास की वहाँ व्यवस्था थी। उन पर भी गुम्बद होने से वह किसी ऐरे-गैरे मुसलमान की कब्र होगी ऐसी कल्पना कर प्रेक्षक लोग उन भवनों को झाँकने तक नहीं, जब कि वे सारे प्राचीन राजभवन के भाग हैं।

110. हिन्दू महल तथा मंदिरों में चारों दिशाओं में द्वार रखने की प्रथा है। तदनुसार तेजोमहालय की भी चारों दिशाओं से एक जैसे प्रवेश द्वारों

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

की कमानें हैं।

क्या छत्रपति शिवाजी उन बाड़ों में नजरबन्द थे?

111. ऐसा कहा जाता है कि छत्रपति शिवाजी निजी 550-600 सैनिकों के साथ 12 मई 1666 से 17 अगस्त तक जब औरंगजेब द्वारा नजरबन्द किए गये थे तो उनके निवास का प्रबन्ध उन्हीं भवनों में था और ताजमहल के पीछे के यमुनाघाट पर उन सबकी स्नान, संध्या आदि की सुविधा थी। ताजमहल परिसर आगरा शहर के दक्षिण में है। दक्षिण से आने वाले मरहटे आगरा आकर इसी स्थान पर रुके थे। वे जयपुर नरेश के समझौते के अन्तर्गत समर्पण के लिए आए थे और उन्हीं की मेज़बानी में रुके थे। सन् 1631 से ताजमहल के परकोटे के अन्दर का भाग तो जयपुर नरेश से हड़प लिया गया था। तथापि ताजमहल परकोटे के बाहर की इमारतें तथा ताजगंज स्थित अनेकानेक हवेलियाँ सन् 1631 के पश्चात् जयपुर नरेश जयसिंह तथा राजकुमार रामसिंह के स्वामित्व में ही थी। अत: उन्हीं में शिवाजी महाराज तथा उनके स्वामिनिष्ठ साथियों को ठहराया गया था।

तेजोमहालय का 'श्री' द्वार

112. हिन्दू महल तथा मंदिरों में चारों दिशाओं में द्वार रखने की प्रथा है। तदनुसार तेजोमहालय उर्फ ताजमहल के हाथी चौक की चारों दिशाओं में द्वार हैं। इनमें से तेजगंज उर्फ ताजगंज का द्वार दक्षिण दिशा में है। ताजमहल परिसर में प्रवेश करने का मुख्य द्वार यही है। क्योंकि हाथी चौक के पार तेजगंज द्वार के ठीक सामने लाल पत्थरों का बना सात मंजिला विशाल द्वार है जहाँ प्रवेश के टिकट बेचे जाते हैं। उस द्वार के पार बाग है और, बाग के उस पार संगमरमरी ताजमहल का विशाल द्वार है। इस प्रकार तेजगंज द्वार, टिकट वाला द्वार तथा संगमरमरी द्वार सारे एक के पीछे एक सीधी रेखा में बने हुए हैं और तीनों के बीच लगभग सौ-सौ गज का अन्तर होगा। तेजगंज की जो गली तेजोमहालय के दक्षिण द्वार के निकट समाप्त हो जाती है उससे

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

आकर आप द्वार में प्रवेश करने से पूर्व द्वार के ऊपर की तरफ देखें। वहाँ एक रिक्त ताक दिखाई देगा। उस ताक में सन् 1631 से पूर्व गणेश की प्रतिमा होती थी। इसी कारण इसका प्राचीन नाम प्रचलित है 'श्री' द्वार। तथापि इस्लामी शासन काल में मुसलमान शासक 'श्री' का अर्थ न जानते हुए उस द्वार को 'श्री' उर्फ 'सीरी' उर्फ 'सीढ़ी' द्वार कहने लगे। वह नाम तथा गणेश जी का रिक्त आसन उस परिसर के हिन्दुत्व के प्रमुख प्रमाण हैं।

आनन्द वाटिकाएँ

113. तेजोमहालय परिसर में जिलोखाना उर्फ आनन्द वाटिकाएँ बनी हुई हैं। देव दर्शन के लिए तथा बाजार से वस्तुएँ खरीदने के लिए आने वाले लोग उन वाटिकाओं में बैठकर खानपान किया करते थे। यदि मुमताज़ की मृत्यु से दुखी-कष्टी शाहजहाँ कब्र के रूप में ताजमहल निर्माण करता तो वह उसमें सार्वजनिक मनोरंजन की आनन्द वाटिकाएं-नहीं बनाता।

आगरा का किले में लगे शीशे

114. आगरा के लालकिले के एक छज्जे के सामने की ओर दूर ताजमहल उर्फ तेजोमहालय स्थित है। राजपूतों के शासन में किले की दीवारों पर छोटे-छोटे गोल शीशे के टुकड़े लगाए जाते थे। उनमें तेजोमहालय का प्रतिबिम्ब पड़कर सैकड़ों टुकड़ों में उतने ही ताजमहल दीखते। इस्लामी शासन जैसा-जैसा ढीला पड़ता गया वैसे मुगल दरबार के नौकर-चाकर आदि शीशे खुरचकर निकालते रहे। इस प्रकार शीशमहल के शीशे नष्ट हो गये। फिर भी पाचीन काल में उन शीशों में तेजोमहालय उर्फ ताजमहल की प्रतिमा किस प्रकार दीखती थी उसका नमूना बतलाने के लिए सन् 1932-34 में पुरातत्व खाते के एक कर्मचारी इन्शाअल्लाखान ने चिकने प्लास्टिक से छज्जे के दीवार पर शीशे के कुछ छोटे टुकड़े चिपका रखे थे। उससे प्रेक्षकों को कल्पना हो जाती थी कि इस्लाम पूर्व राजपूतों के शासन में शीशमहल

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

के शीशों में किस प्रकार सैकड़ों प्रतिमाएँ दीखती थीं।

इस्लामी परम्परा में शीशमहलों का कोई प्रयोजन नहीं होता। मुसलमानों में स्त्रियों को पर्दे में रखा जाता है। शीशमहल में विचरने वाली स्त्रियों की तो सैकड़ों छविएँ होती हैं। जो इस्लामी परम्परा एक स्त्री का मुखड़ा भी दूसरों की नजर में न पड़े इतना बड़ा परदा बरतती है वह शीशमहल बनाकर एक ही स्त्री की सैकड़ों प्रतिमाएँ दर्शाने वाली व्यवस्था कर ही नहीं सकती। अत: जहाँ भी शीशमहल हो, पहचान लेना चाहिए कि वह मूलत: इस्लाम द्वारा बनाई गई इमारत नहीं है। तदनुसार आगरा का लालकिला इस्लाम राज्य स्थापना होने से सैकड़ों वर्ष पूर्व बना किला है। अत: उसमें शीशमहल होता था। उन शीशों में तेजोमहालय आदि के प्रतिबिन्ब देखे जा सकते थे।

उन शीशों का अनुचित लाभ उठाकर धूर्त गाइड (स्थल-दर्शक) लोग प्रेक्षकों को झूठ बोलते हैं कि सन् 1658 से 1666 तक जब शाहजहाँ औरंगजेब द्वारा आगरे के लालकिले में नजरबन्द कर दिया गया था तब वह किले के उस उतुंग छज्जे में दीवार की तरफ मुँह कर बैठे-बैठे छोटे-छोटे शीशों में ताजमहल की छवि देख-देखकर आहें भरता रहता था।

यह कहानी सर्वथा कपोलकल्पित है। क्योंकि बन्दी बनाया शाहजहाँ किले के एक अँधेरे कक्ष में नीचे बन्द था। उसे ऊपर खुली हवा खाने के लिए शानदार शाही छज्जे में कभी जाने नहीं दिया जाता था तो वह शीशों में ताजमहल की छवि कैसे देखता?

दूसरा मुद्दा यह है कि शीशमहल में शीशे के टुकड़े छत के पास दीवार के ऊपरी भाग में लगे होते हैं। उन छोटे-छोटे शीशों में प्रतिविम्बित होने वाली छवि देखने के लिए खड़ा रहना पड़ता है और आँखों की दृष्टि तीक्ष्ण होना आवश्यक होता है। शाहजहाँ जब बन्दी बना तब वह वृद्ध तथा रोग-नर्जर बन चुका था। उसकी कमर में पीड़ा थी। उसकी दृष्टि मंद हो चुकी थी। गर्दन टेढ़ी करके खड़े

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

वह छोटे छोटे शीशों में ताजमहल की बारीक प्रतिमाएँ दिन-भर ताकते रहने की अवस्था में उस समय कतई नहीं था।

तीसरा मुद्दा यह है कि जब छज्जे में आराम से बैठकर तकिये पर टेके हुए सामने पूरा ताजमहल सहजतया दिखाई देता था तो किले की दीवार की तरफ मुँह करके छोटे शीशों में ताजमहल की सूक्ष्म छवि देखने का निरर्थक प्रयास कौन किस कारण से करेगा?

किले के शीशों में ताजमहल का प्रतिबिम्ब दीखता है। इस कारण शाहजहाँ ही ताजमहल का निर्माता होना चाहिए—यह कहाँ का तर्क है? किले के शीशों के सामने जो भी वस्तु या वास्तु होगी वह शीशे में अवश्य दिखाई देगी। अतः राजपूत शासन से ही आगरा के लालकिले में शीशे लगे थे और तेजोमहालय इमारत भी प्राचीन काल से बनी होने के कारण उसकी छवि किले के शीशों में पुरातन काल से प्रतिबिम्बित होती रहती थी। इन्शाअल्लाखान के पुत्र अनीश अहमद ने मुझे यह बताया कि उसके पिता ने नमूने के तौर पर चिकने प्लास्टिक पर लगे शीशों के छोटे गोल शीशे दीवारों पर चिपका दिए थे। उन्हें मुगली शासन में लगे शीशे समझना अनुचित है। इन्शाअल्लाह के पश्चात् अनीश अहमद भी लालकिले में पुरातत्व खाते का कर्मचारी लगा था।

115. ताजमहल के गुम्बद पर लोहे की सैकड़ों छोटी गोल कड़ियाँ लगी हैं। उन पर दीपावली जैसे पर्व पर सैकड़ों दीप रखे जाते थे।

116. शाहजहाँ-मुमताज़ के असीम प्रेम को ताजमहल की निर्मिति का कारण बताने वाले लोग और उनके श्रोता कल्पना कर बैठते हैं कि शाहजहाँ-मुमताज़ बहुत नाज़ुक, दयालू, परोपकारी, कोमलहृदयी जोड़ी रही होगी। किन्तु इतिहास में तो दोनों ही दुष्ट, कंजूस, क्रूर तथा अहंकारी व्यक्ति थे, ऐसा ब्यौरा मिलता है।

अन्याय, असन्तोष तथा दरिद्रता का युग

117. पाठ्य-पुस्तकों द्वारा छात्रों को पढ़ाया जाता है कि शाहजहाँ का

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

शासनकाल शांति का युग था। अत: उसके शाही खजाने में अपार सम्पत्ति इकट्ठी हो गई। उसी से शाहजहाँ ने दिल्ली का लालकिला, दिल्ली की जामा मस्जिद, आगरा का ताजमहल, अहमदाबाद में वर्त मान गवर्नर का निवास स्थान, आगरा के किले के अन्दर पाँच सौ इमारतें इत्यादि बनवाई। हम पाठकों को सावधान करना चाहते है कि ऊपर लिखे दावे सरासर झूठ हैं। शाहजहाँ के शासन में समृद्धि भी नहीं थी तथा शांति भी नहीं थी। लगभग 30 वर्ष के शासन में मुगली सेनाएँ 48 युद्धों में रत रहीं थीं और कई बार इतने भयंकर अकाल पड़े कि गरीब जनता को अपने बच्चे बेचने पड़े, और कुत्ते-बिल्लियों का मांस खाना पड़ा। इन घटनाओं का ब्यौरा लेखक द्वारा लिखित 'The Taj Mahal is a Temple Palace' शीर्षक की पुस्तक में प्रस्तुत है। ताजमहल को जब्त करने से शाहजहाँ को वहाँ से मयूर सिंहासन आदि अपार सम्पत्ति एक बार अवश्य प्राप्त हुई। किन्तु इस प्रकार लूटपाट से होने वाला धन 48 युद्धों में खर्च होता रहा।

अत: अध्यापक, प्राध्यापक, इतिहासज्ञ, ग्रन्थकार, साहित्यिक आदियों को हम सावधान करना चाहते हैं कि इतिहास की वे इस प्रकार की निर्मूल, निराधार बातों को दोहराया न करें। ध्यानपूर्वक तत्कालीन तवारीखें पढ़ने पर उन्हें पता चलेगा कि शाहजहाँ का शासन बड़ा अशान्त तथा अन्यायी था। उसमें बादशाह तथा प्रजा अधिकाधिक दरिद्र होते रहे।

118. संगमरमरी चबूतरे पर बना केन्द्रीय कक्ष अष्टकोना है। उसमें बना संगमरमरी जाली का आला भी अष्टकोना है। स्वयं ताजमहल अष्टकोना है। ऐसे अष्टकोनी भूमिका में गोल शिवलिंग ही ठीक मध्य साध सकता है। मृत मुमताज़ की लम्बी कब्र अष्टकोने आले में बेढंगी, बेहिसाबी प्रतीत होती है। यदि ताजमहल शाहजहाँ द्वारा बना होता तो वह अष्टकोना न बनता। वैसे भी अष्टकोना हिन्दू धार्मिक आकार है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

119. ताजमहल देखने वाले लोग मुमताज़ की कब्र के पास शांतचित खड़े होकर ऊपर गुम्बदी छत को देखें। वहाँ उन्हें रंगीन चित्र दिखेगा। उसके मध्य में आठ दिशाओं के सूचक आठ बाण, उन्हें घेरे हुए 16 सर्प, उन्हें घेरे हुए 32 त्रिशूल और उन्हें घेरे हुए 64 कमल की कलियाँ चित्रित की हुई दिखाई देंगी। वे सारे चिन्ह हिन्दू तो हैं ही किन्तु 8 के पहाड़े की 8-16-32-64 आदि संख्याएँ भी हिन्दू परम्परा की हैं।

नकली दस्तावेज

120. ताजमहल में कब्र के पास बैठने वाले मुसलमान मुजावर फारसी में लिखा एक दस्तावेज रखा करते थे। उसका शीर्षक था 'तवारीख-ए-ताजमहल'। कुछ वर्ष पूर्व वह दस्तावेज चोरी-छुपे पाकिस्तान भेजा गया। किन्तु 19 वीं शताब्दी में H.G. Kenee आदि कुछ आंग्ल अधिकारियों ने उस दस्तावेज की जाँच-पड़ताल कर उसे नकली घोषित कर दिया। नकली दस्तावेज रखने की आवश्यकता मुसलमानों को इसी कारण पड़ी कि स्वयं शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाने का दावा कहीं नहीं किया है। उलटा उसके बादशाहनामे में स्पष्ट लिखा है कि जयपुर नरेश से हड़प लिया गया।

121. ताजमहल के गुम्बद तथा मीनार पूर्णतया इस्लामी चिन्ह हैं ऐसा कई लोग बड़े आग्रह से प्रतिपादन करते रहते हैं। इस्लाम का मूल सर्व प्रथम केन्द्र जो काबा है उस पर मीनार भी नहीं और गुम्बद भी नहीं है। अत: गुम्बद को इस्लामी आकार, चिन्ह या प्रतीक मानना ही गलत है। ईरान, इराक, येरुशलेम, तुर्कस्थान आदि देशों में जो गुम्बद वाली इमारतें हैं वे इस्लाम-पूर्व की हैं क्योंकि इस्लाम को अभी चौदह सौ वर्ष भी पूर्ण नहीं हुए हैं। गुम्बद की निर्माण परम्परा उससे कहीं प्रचीन है। उसी प्रकार कब्र को तो एक भी मीनार की आवश्यकता नहीं होती। तो फिर ताजमहल के कोनो पर चार एकसमान तथा वर्ग बनाती मीनारें क्यों हैं? वे इसलिए हैं कि किसी मंगल स्थान, पूजा

PDF Compression, OCR, Web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

स्थान के वेदी के कोनों पर, सत्यनारायण पूजा वेदी के चारों कोनो पर इसी प्रकार चार स्तम्भ अवश्य होते हैं।

इस प्रकार गुम्बद तथा मीनारों की इस्लाम-पूर्व हिन्दू परम्परा बतलाते ही ताजमहल को इस्लामी इमारत समझने वाले लोग एकाएक निजी भूमिका बदलकर यह कहना आरम्भ कर देते हैं कि ताजमहल बनाने वाले कारीगर, मजदूर इत्यादि हिन्दू होने के कारण ताजमहल हिन्दू शैली का बना होगा?

ऐसा कहने से उन्होंने अपनी मूल भूमिका से पलटा खाकर एकाएक विरोधी भूमिका अपना ली इसका उन्हें जरा भी ध्यान नहीं रहता।

उन्हें यह जान लेना आवश्यक है कि ताजमहल का गुम्बद तथा मीनार पक्के हिन्दू चिन्ह हैं। ताजमहल के हिन्दू निर्माण के वे ठोस प्रमाण हैं।

ऊपर दिए विवरण से पाठक समझ गये होंगे कि ऐतिहासिक इमारतों का दो प्रकार से विचार करना चाहिए—(1) उसका आकार, विस्तार, रंग, उसके ऊपर लगे चिन्ह इत्यादि; (2) उसके निर्माण सम्बन्धी दिया जाने वाला ब्यौरा।

ऐतिहासिक इमारतों को देखते समय इन दो बातों पर सूक्ष्म विचार करना बड़ा आवश्यक होता है। उन पर विचार करते समय जरा-सी भी कहीं असंगति प्रतीत हुई तो समझ लेना चाहिए कि उसके इतिहास में अवश्य कोई न्यूनता या विकृति है।

लोग ताजमहल आदि इमारतें 'देखने' जा रहे हैं ऐसा कहते तो हैं किन्तु वे 'देखने' नहीं अपितु गाइड (स्थलदर्शक) की कही केवल निराधार बातें ही सुनकर वापस लौटते हैं। क्योंकि यदि वे वास्तव में इमारत ध्यान लगाकर देखते तो इमारतों के अनेकानेक चिन्हों से उनको पता लगता कि वे इमारतें इस्लाम-पूर्व हिन्दुओं की बनाई हुई हैं। अत: प्रेक्षकों को सही अर्थ में इमारतें बारीकी से देखकर प्रत्येक

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मुद्दे पर गहरा विचार करना चाहिए। गाइड की कही बातों को ही सही नहीं समझना चाहिए।

ताजमहल, कुतुबमीनार आदि विश्व की ऐतिहासिक इमारतें इस्लाम द्वारा निर्मित होने की केवल अफवाह-ही-अफवाह है। जिस मुसलमान सुल्तान-बादशाह को उन इमारतों का श्रेय दिया जाता है उनके तवारीखों में उन इमारतों का उल्लेख तक नहीं है तो निर्माण का ब्यौरा अंकित होना तो दूर ही रहा।

तथापि इतिहास लेखकों ने फलानी कब्र फलाने सुल्तान ने बनवाई, फलाना मकबरा फलानी बेगम ने बनवाया, फलानी मस्जिद उस बादशाह ने बनवाई ऐसा निराधार हल्ला-गुल्ला मचाकर इतिहास में इतना अन्याय और अन्धेर मचा रखा है कि जहाँ विश्व में एक भी दर्शनीय इमारत मुसलमानों की बनवाई हुई नहीं है वहाँ भारत में ही सैकड़ों इमारतें उन्होंने बेधड़क किसी-न-किसी मुसलमान के नाम गढ़ दीं। कल्पना करें बर्बर लड़ाके जो केवल लड़ना जानते थे। जैसे विश्व में सभी जगह वे फैले वैसे ही धूर्तता और धर्मान्धता से भारत में राज तो पा गए क्या कला प्रेमी भी बन गए? क्या भवन निर्माण भी सीख गए?

कई जगह तो इतिहासकारों ने ऐसा भी लिख रखा है कि अनेक मुसलमान सुलतान, बादशाह तथा बेगमों ने निजी जीवन-काल में अपने लिए या अपने बाल-बच्चों के लिए बाड़े नहीं बनवाए। किन्तु निजी प्रेत के लिए आलीशान महलों जैसी कब्रें अवश्य बनवा रखीं। क्या यह तर्कसंगत है? किसी को क्या कोई पता होता है कि वह कब और किस नगर में मरेगा? और उसकी मृत्यु के पश्चात् उसे उसी विशाल भवन में अवश्य दफनाया जाएगा इसकी भी क्या शाश्वती हो सकती है? यह अफवाह अज्ञानी इतिहासकारों ने अन्धेपन से इस कारण इतिहास में गढ़ दी कि 'कब्र' की आलीशान इमारत बनाने वाला वारिस तो उन्हें कोई दिखाई दिया नहीं तथापि भवन में कब्र तो हैं अतः उन्होंने अनुमान किया कि मृतक ने निजी जीवनकाल में ही

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

दूरदृष्टि से अपने प्रेत के लिए एक महल बना रखा था। ऐसे शेख-चिल्लियों की इस्लामी इतिहास में (इतिहासकारों के ऊटपटाँग कथनानुसार) कोई कमी नहीं दीखती। किन्तु उन इतिहासकारों ने यह बात नहीं सोची कि इस्लामी सुलतान बादशाहों के घरानों में तीव्र आपसी शत्रुता रहती थी। ऐसी अवस्था में यदि कोई शेखचिल्ली अपने आसरे के लिए (निजी जीवनकाल में अन्य काम-धन्धे तथा झंझट छोड़कर) एक वैभशाली कब्र (महल) बनाने में पल्ले के लाखों रुपये तथा समय नष्ट करने की मूर्खता करे भी तो उसके रिश्तेदार मृतक का शव चील तथा कुत्तों के आगे फेंककर स्वयं उस महल में ठाठ से रहने नहीं लगेंगे इसकी क्या शाश्वती थी?

प्रचलित इतिहास में मुझे तो आरम्भ से अन्त तक ऐसी अनेक अतार्किक बातों की भरमार दीखती है। प्रचलित इतिहास इस प्रकार पूर्णतया अविश्वसनीय होने से पग-पग पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। ताजमहल सम्बन्धी ऊपर दिया विवरण केवल उदाहरण मात्र समझकर पाठकों को प्रत्येक ऐतिहासिक कथन का उसी प्रकार सर्वांगीण विश्लेषण करने का अभ्यास करना आवश्यक है।

□□□□□

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पश्चात्य इतिहासकारों का मनघड़न्त इतिहास आज हम पढ़ते हैं। उनके लिए यह अत्यन्त सुविधाजनक था कि प्राचीन काल से आर्यवर्त (भारत) में इतिहास लिखने की परम्परा नहीं रही। कारण आर्य लोग अपनी अच्छाईयों या विजयों का विशेष उल्लेख करना पसन्द नहीं करते रहे होंगे। और न ही उन्हें अपने बारे में मनघड़ंत किस्से कहने की आवश्यकता रही होगी। इतिहास को दृष्टांतो व कथाओं का रूप दे कर केवल शिक्षा के लिए प्रयोग किया जाता था। ऐसा अनुमान किया जाता है।

किसी झूठ को जब बार बार बोला जाता है तो उस झूठ को सच मानने वाले भी कई लोग निकल आते हैं। स्वार्थ से भरा इन्सान उस झूठ से अपनी कामना सिद्धी करते करते कब उसे सच मानने लगता है पता ही नहीं चलता।

बौद्ध काल में जब महात्मा बुद्ध अवतार घोषित किए गए तो उस अवतार की प्रामाणिकता के लिए उनके तथाकथित पूर्व जन्मों की मनघड़ंत कथाएं घड़ी गयीं। इन्हे जातक नाम दिया गया।

इन्हीं कथाओं की देखा देखी आर्य ऐतिहासिक घटनाओं को, जो दृष्टांत रूप में कही जाती थीं, पुराणों के रूप में लिखा गया। इसिलिए इनमें भी जातक कथाओं की भांति अतिश्योक्तियां भरी हुई हैं। बहुत सी घटनाएं बुद्धिगम्य नहीं हैं।

श्री गुरुदत्त ने इन पुराणों व उपनिषदों की कथाओं को काल के अनुसार निम्न पुस्तकों में क्रमबद्ध किया। अतिश्योक्तियों से भरपूर इन घटनाओं की छंटनी कर प्राचीन व आधुनिक विज्ञान द्वारा विश्लेषण कर इन्हें प्रामाणिक स्वरूप दिया।

श्री गुरुदत्त की सशक्त लेखनी से निकली अमर रचनाएं
भारतवर्ष का संक्षिप्त इतिहास आदि काल से रामोदय.. रु 80.
इतिहास में भारतीय परम्पराएं .. रु 75

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

इतिहास का शाब्दिक अर्थ होता है ऐसा ही हुआ है। सच्चा इतिहास गवाह है कि मनुष्य, देश व जाति की अधोगति उनके अपने अज्ञान व कुकर्मों के कारण ही होती है।

भविष्य के पतन से बचने के लिए इतिहास का अन्वेंशन करना चाहिए, उससे शिक्षा लेनी चाहिए।

हमारे पूर्वजों के शुभ-अशुभ कार्यों का परिणाम हमें ही भुगतना होगा। अत: उनको लिखने का हक हमारा ही बनता है। एक सहस्त्र वर्ष की गुलामी से मानसिक रूप से हम इतने पराधीन हो गए हैं कि सहस्त्रों वर्ष पूर्व के अपने पूर्वजों के बारे में जानने के लिए उनका मुख देखने हैं जो अपना इतिहास दो से तीन सहस्त्र वर्ष का मानते हैं।

हमारी संस्था का प्रयास रहा है कि इतिहास का वर्णन करते समय वही कहें जो कि वास्तव में ही इतिहास हो। इसी श्रंखला में कुछ अन्य कड़ीयाँ

तेजपाल सिंह धामा द्वारा रचित इतिहास

हमारी विरासत	अर्थात दिव्य भारत का गौरवशाली इतिहास	रु 220
मनुर्भव	अर्थात विजयी विश्व हिन्दुत्व हमारा	रु 50

इतिहास व ऐतिहासिक उपन्यासों में कुछ अन्तर है और वह यही है कि उपन्यास में घटनाएं व काल सच्चा होने पर भी गौण पात्र काल्पनिक हो सकते हैं। उपन्यासकार उनके द्वारा वह कहलवा सकता है जो होना चाहिए था पर हो नहीं सका क्योंकि मुख्य पात्र करने में असमर्थ था।

तेजपाल सिंह धामा द्वारा रचित ऐतिहासिक उपन्यास

पराजित विजेता	अर्थात पृथ्वीराज चौहान	रु 60
अखण्ड आर्यवर्त	अर्थात चाणक्य कथा	रु 70
पंक से पंकज	अर्थात वाल्मीकि कथामृत	रु 50
अजेय अग्नि	अर्थात महारानी कर्म देवी की शौर्य गाथा	रु 70
अग्नि की लपटें	अर्थात महारानी पद्मिनी की बलिदान कथा	रु 70
ठण्डी अग्नि	अर्थात महारानी चंदा की शौर्य गाथा	रु 70

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

क्यों पढ़ें इतिहास का पुनर्लेखन?

आज हम जो इतिहास पढ़ते हैं यह गोरे अंग्रेजों द्वारा लिखा गया व हमें काले अंग्रेजों द्वारा पढ़ाया जा रहा है।

क्या आपने कभी यह सोचा है कि भारतीय इतिहास से ही इतनी छेड़छाड़ क्यों हुई?

अंग्रेजों के भारत में आने पर भारतीयों ने (मुख्यत: हिन्दुओं व कुछ मुगलों ने) स्थान स्थान पर उनका सशस्त्र विरोध किया। हिन्दुओं का विद्रोह स्वाधीनता की चाह व गुलामी के विरोध में था। परन्तु मुस्लिम विद्रोह का कारण कुछ और भी था। मुख्यत: यह गद्दी छिनने की पीढ़ा थी। तब तक मुस्लिम जनता जो अपने को राज करने वाली जाति व हिन्दुओं से उच्चतर समझती थी अपना अभिमान मटियामेट होता देख हिन्दुओं का साथ देने को मजबूर हो गई थी। परन्तु आधुनिक हथियारों व लोमड़ी जैसी बुद्धि के बल पर अंग्रेजों ने धीरे-धीरे सारे भारत पर अपना राज कायम कर लिया।

राज कायम करने का बाद भी यदा कदा उन्हें कई छोटे बड़े विद्रोहों का सामना करना पड़ता था। समय पाकर यह विद्रोह बढ़ते गए। इन विद्रोहों को समाप्त करने के उपाय दो तरह से किए जाने लगे।

एक उपाय तो सीधा सादा था, बल का प्रयोग जिसकी राजा को कोई कमी नहीं होती। दूसरा उपाय था छल। छल भी दो तरह से था। प्रथम विधि तो वैमनस्य थी जो हिन्दू-मुस्लिम के बीच बढ़ाया जा रहा था और हिन्दू-सिख के बीच पैदा किया जा रहा था।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

दूसरी विधि जो लम्बी थी जनता को झूठा इतिहास पढ़ाया जा रहा था कि अंग्रेजों व मुसलमानों की तरह आर्य (हिन्दू) भी भारत के बाहर से आकर द्रविड़ो से संघर्ष में विजित होकर उत्तर भारत के मालिक बन गए अत: हिन्दू अभारतीय हैं। इस तरह उत्तर व दक्षिण भारत में भी वैमनस्य के बीज बोए जा रहे थे। सिद्ध किया जा रहा था कि मुगलों के आने से पहले हिन्दू जाहिल, जंगली व दकियानूसी थे। इन्हें सभ्यता का प्रथम पाठ मुगलों ने पढ़ाया। इस झूठ में मक्कारी और डाली कि जितने भी भवन, किले और महल जो कभी भी विजेता मुगलों के कब्जे में रहे, उन्हीं की निर्मिति हैं। उनके आने से पहले हिन्दू झोपड़ियों में ही रहते थे। इस का सीधा लाभ यह मिला कि पढ़े लिखे हिन्दू अपने को अभारतीय मानने लगे जो आज तक मान रहे हैं। एक बृहत् लाभ अभारतीयों को यह मिला कि उत्तर भारत व दक्षिण भारत में वैमनस्य ऐसा हुआ जो आज तक बढ़ता जा रहा है। दक्षिण भारत क्रान्तिकारी आन्दोलन से लगभग कट सा गया और एक तरह से आधा अंग्रेज हो गया।

इस नीति के पोषण के लिए कांग्रेस बनाई गई। यही कांग्रेस जो गोरे अंग्रेजों के जाने के बाद उनके अंधभक्तों (काले अंग्रेजों) द्वारा संचालित है।

इस कांग्रेस और अंग्रेज़ी पद्धति द्वारा पढ़े लिखे लोग इस झूठे इतिहास के बारे में कोई भी सुधार करने का सोच भी नहीं पाते। इससे उनकी सभी मान्यताएं टूटती हैं। आज तक का पढ़ा बेकार हो जाता है। मानसिक गुलाम अपने को स्वतन्त्र देखना ही नहीं चाहता। शायद उसे लगता हो कि स्वतन्त्र होने से गुलाम के सिर से छत्रछाया

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हट जाएगी।

एक स्वतन्त्र व्यक्ति के दृष्टिकोण से सोचें तो क्या मुगल, अंग्रेज, फ्रांसिसी, पुर्तगाली ओर अन्य हमलावर मूर्ख थे जो जाहिल या झोंपड़ी वासी हिन्दुओं को लूटने आते थे। क्या सच में हिन्दुस्तानी कच्चे मकानों में रहते थे? क्या कारण है कि पठान काल का तथाकथित निर्मित 1200 साल पहले का किला तो सही मिलता है परन्तु 1300 साल पुराना हिन्दुओं का किला उत्तर भारत में नहीं मिलना। जबकि राजस्थान में या तथाकथित पराजित द्रविड़ों के भवन 1500 से 2000 वर्ष पूर्व के मिल जाते हैं। यदि आर्य विजेता थे तो क्या वे भवन बनाना भी नहीं जानते थे?

एक मननशील व्यक्ति नि:संकोच कह सकता है कि यह सब ऐतिहासिक तोड़फोड़ के अतिरिक्त और कुछ नहीं जिसमे हिन्दू विचारधारा जो कि विश्व में सर्वश्रेष्ठ स्वयंसिद्ध है, को मानने वाले अपने को निकृष्ट मानें। इसी भ्रमजाल को तोड़ने के लिये इतिहास का पुनर्लेखन किया गया है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

स0 श्री ओक ने सम्पूर्ण विश्व में भ्रमण कर कई ऐतिहासिक स्थलों के बारे में जानकारीयां प्राप्त की। जिन्हें एकत्रित कर मनन करने पर उन्होंने देखा कि स्थान-स्थान पर व विभिन्न धर्मों पर आर्य संस्कृति की छाप आज भी विद्यमान है। इन सभी का संकलन कर इन्हें पुस्तकाकार दिया गया।

यह 2 खण्डों में लिखित पुस्तक मूल रूप से अंग्रेज़ी में छपी थी। इसका विवरण नीचे है:-

World Vedic Heritage 2 vols. Rs 600

उपरोक्त पुस्तक का हिन्दी अनुवाद भी उपलब्ध है जो पाठकों की कई जिज्ञासाएं शान्त करेगा ऐसा अनुमान है।

वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास - 1	रु 75
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास - 2	रु 85
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास - 3	रु 85
वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास - 4	रु 85
मूल्य सम्पूर्ण सैट	रु 330

रु 300/- अग्रिम भेजकर 4 खण्ड के इस सैट को रजि0 डाक से मंगवा सकते हैं।

E.MAIL - indiabooks@rediffmail.com

हिन्दी साहित्य सदन

2,बी डी चैम्बर्स ,10/54 डी बी गुप्ता मार्ग

(समीप प्रह्लाद मार्केट) करोल बाग, न0 दिल्ली-05

फोन: 23553624,23551344

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सूचनार्थ

भारतवर्ष को अंग्रेजों की दासता से मुक्त करने के लिए किए गए सन् 1857 के स्वतन्त्रय संग्राम को प्रथम समर कहा जाता है। यह उचित ही है क्योंकि वह बड़े पैमाने पर, दृढ़तापूर्वक तथा वीरता से लड़ा गया था। यद्यपि अंग्रेजों ने इसे गदर का नाम ही दिया था। उस समय भारतीयों में स्वाभिमान था और उन्होंने इसे गदर मानने से इंकार कर दिया।

इसके उपरांत अंग्रेजी के सिंहासन को बुरी तरह हिला देने वाला स्वातन्त्र्य समर एकमेव नेता सुभाषचंद्र बोस के नेतृत्व में 1943-45 में लड़ा गया।

यह संग्राम पूरी तैयारी के साथ, विस्थापित नेता जी द्वारा भारत से बाहर स्थापित भारत की स्वतन्त्र सरकार ने आरम्भ किया था। यद्यपि युद्ध में कई कारणों से विजय नहीं मिली, इस पर भी तत्कालीन राजनीतिक घटनाएँ सिद्ध करती हैं कि भारत को स्वतन्त्रता दिलाने में इस संग्राम का भारी योगदान था। अंग्रेज समझ गए थे कि भारत की राजनीतिक जागृति इस स्तर पर पहुँच चुकी है कि अब भारत को अधीन रखना सम्भव नहीं है।

यह तो वर्तमान भारत की राजनैतिक दुर्व्यवस्था तथा गांधीवादी नेताओं की दिशाहीनता है कि आज़ाद हिन्द फौज का स्वतन्त्रता में योगदान समझते हुए भी इसे स्वातन्त्र्य संग्राम के रूप में मान्यता नहीं देते।

इस पुस्तक के लेखक श्री पुरुषोत्तम नागेश ओक ने भी इस संग्राम में भाग लिया था तथा दो वर्ष तक नेताजी के साथ कार्य में संलग्न रहे। लेखक ने विस्तार से आज़ाद हिन्द फौज को पूरी कहानी और इसकी तैयारी का विधिवत् वर्णन किया है। आज़ाद हिन्द फौज के विषय में बहुत सी जानकारी जो भारत की जनता को नहीं है, दुर्लभ रंगीन चित्रों सहित, पुस्तक *"भारत का द्वितीय स्वातन्त्र्य समर"* में मिलेगी... मूल्य... रु 220/- अग्रिम भेजकर रजि0 डाक से मंगवा सकते हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पुरुषोत्तम नागेश ओक

जन्म : २ मार्च १९१७, इन्दौर (म० प्र०)
शिक्षा : बम्बई विश्वविद्यालय से एम० ए०, एल-एल० बी०
जीवन कार्य : एक वर्ष तक अध्यापन कर सेना में भर्ती।

द्वितीय विश्व युद्ध में सिंगापुर में नियुक्त। अंगरेजी सेना द्वारा समर्पण के उपरान्त आज़ाद हिन्द फौज के स्थापन में भाग लिया, सैगौन में आज़ाद हिन्द रेडियो में निदेशक के रूप में कार्य किया।

विश्व युद्ध की समाप्ति पर कई देशों के जंगलों में घूमते हुए कलकत्ता पहुँचे। १९४७ से १९७४ तक पत्रिकारिता के क्षेत्र में (हिन्दुस्तान टाइम्स तथा स्टेट्समैन में) कार्य किया तथा भारत सरकार के सूचना प्रसारण मंत्रालय में अधिकारी रहे। फिर अमरीकी दूतावास की सूचना सेवा विभाग में कार्य किया।

देश-विदेश में भ्रमण करते हुए तथा ऐतिहासिक स्थलों का निरीक्षण करते हुए उन्होंने कई खोजें कीं। उन खोजों का परिणाम उनकी रचनाओं के रूप में हमें मिलता है। उनकी कुछ रचनाएँ हैं -- ताजमहल मन्दिर भवन है, भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें, विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय, वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास, कौन कहता है अकबर महान था?

उनकी मान्यता है कि पाश्चात्य इतिहासकारों ने इतिहास को भ्रष्ट करने का जो कुप्रयास किया है, वह वैदिक धर्म को नष्ट करने के लिए जानबूझकर किया है और दुर्भाग्यवश हमारे स्वार्थी इतिहासकार इसमें उनका सहयोग कर रहे हैं।

हिन्दी साहित्य सदन
18/28 (मार्ग 28), पंजाबी बाग पूर्वी
नई दिल्ली - 110 026